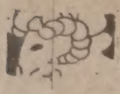
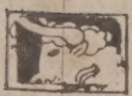
आपका भविष्य

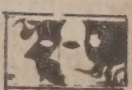
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



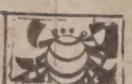
मेष : श्रेष्ठ फलों का संचार होने लगेगा, आर्थिक लाभ में वृद्धि, कुछ नए अधिकारों की प्राप्ति होगी, नई योजनायें भी ऐसी बनायेंगे जो भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगी, यात्रा सम्भावित है।



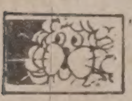
वृष : सप्ताह कुछ संघर्षपूर्ण महसूस होगा शारीरिक एवं मानसिक परेशानी पैदा होगी, कारोबार में भी कुछ उलझन आ सकती है, फिर भी मेहनत करने पर थोड़ी-बहुत सफलता मिल जाया करेगी।



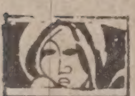
मिथुन : कुछ विशेष शुभ एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन होते दिखाई देंगे, दीर्घकाल से चली आ रही समस्यायें दूर होने लगेंगी, आशाओं में सफलता एवं योजनायें भी लाभप्रद रहेंगी।



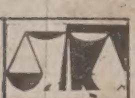
कर्क : व्यर्थ के कामों में समय एवं धन की बर्बादी होगी, असफलता या रुकावटों का सामना होगा, अजनबी लोगों से बचना चाहिए वर्ना आर्थिक हानि भी हो सकती है, संघर्ष काफी रहेगा।



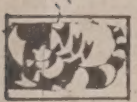
सिंह : कुछ अधूरे या विशेष कामों में सफलता मिल जाएगी, कारोबार कुछ सुधरेगा परन्तु आर्थिक लाभ आशा से कम ही होगा, नए काम से लाभ की आशा न रखें।



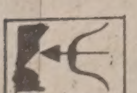
कन्या : सप्ताह पहले से अच्छा है, उन्नति एवं सुधार के अवसर मिलेंगे, शुभ फलों में बढ़ोतरी होती जाएगी, स्त्री परामर्श से लाभ पहुंचेगा, नई या सोची हुई योजनाओं में सफलता पायेंगे।



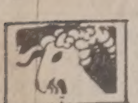
तुला : हालात पहले से सुधरेंगे, कुछ गंभीर समस्यायें दूर होंगी, आर्थिक दशा के साथ-साथ कारोबार भी सुधरता जाएगा, परन्तु घर-बाहर व्यर्थ के वाद-विवाद या कलह-क्लेश से मन परेशान रहेगा।



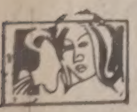
वृश्चिक : व्यर्थ का व्यय एवं घरेलू बातों से मन परेशान रहेगा, भाई को कष्ट या चिन्ता बनेगी, सेहत भी अचानक ही बिगड़ सकती है, चाहते हुए भी आप इच्छानुसार लाभ न उठा सकेंगे।



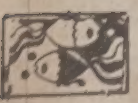
धनु : शुभ फलों में वृद्धि होती जायेगी, कारोबार की हालत जो काफी समय से मन्द अवस्था में चली आ रही थी अब सुधरने लगेगी, कठिनाईयां भी दूर होती जायेंगी, भाग्य साथ देगा।



मकर : कामकाज में उन्नति के अवसर आयेंगे, परन्तु संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, लाभ आशा से कम या अधिक, होने से मन परेशान रहेगा, कुछ पुरानी उलझनें सुलझ जायेंगी।



कुम्भ : जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा शुभ फलों में वृद्धि होती जाएगी, परन्तु सेहत की ओर विशेष ध्यान दें, कारोबार ठीक चलेगा, कारोबार में सफलता मिलेगी, सोचे हुए काम बन जायेंगे।



मीन : सप्ताह विशेष अच्छा नहीं, सावधानी से रहें, सोचे हुए काम पूरे न हो सकेंगे, परेशानियां भी रोज नए रंग बदल कर सामने आयेंगी, नया काम शुरु न करें, लाभ देर से मिलेगा।

आपके पत्र

काफी इन्तजार के बाद दीवाना का अंक 23 मिला। प्रथम पृष्ठ अच्छा नहीं लगा, अगर इसकी जगह कोई हीरो या हीरोइन की तस्वीर होती तो मजा आता, मोटू पतलू चिराग-ए-चीन बेहद पसन्द आया। सिलबिल-पिलपिल और फैन्टम मन को भाए। कहानियां सभी अच्छी लगीं। गरीब चन्द की डाक में अपना प्रश्न न देखकर थोड़ा गुस्सा आया।

सुखविन्द्र जौड़ा—कृष्णा पार्क

दीवाना का 23 वां अंक मिला जो किसी दीवाने से कम नहीं था। जिसमें मुख्यतः—'नान स्टॉप उड़ान' व्यंग्य रचना विशेषकर पसंद आयी। 'लल्लू','मोटू-पतलू', 'सेंटम और पीपल का भूत' राजा जी, 'गाय ने ज्यादा दूध दिया' आदि चित्र फीचर रोचक होने के साथ-साथ हास्यप्रद भी थे। इतने दिनों बाद दीवाने कलाकार 'मोटू-पतलू' से मुलाकात हुई। जिससे मन प्रसन्न हो गया।

विवेकानन्द—कामठी

दीवाना अंक 23 पढ़कर मजा आ गया, 'सिलबिल पिलपिल' के मजेदार कारनामे दीवाना में चार चाँद लगाते हैं।

'गरीब चन्द की डाक' का अजीब ही लुत्फ आता है अगर आप काका हाथरसी से दीवानों के प्रश्नों के उत्तर दिलवायें तो अच्छा रहेगा। उम्मीद है दीवाना इसी प्रकार से स्वस्थ हास्य सामग्री देता रहेगा।

सुखराम सिंह तोमर—उज्जैन (म०प्र०)

दीवाना का अंक 22 'दीवाली विशेषांक' के रूप में प्राप्त हुआ, जब पढ़ने बैठा तो समाप्त करके ही उठा। मुख पृष्ठ देखते ही हंसी छूट गई। 'शक्ति' फिल्म का ड्रामा बेहद पसंद आया। अगली बार 'जीयो और जीने दो' का ड्रामा प्रकाशित करें। क्यों और कैसे पढ़कर काफी जानकारी प्राप्त हुई। 'एंग्री यंगमैन वर्णमाला बेहद पसंद आई, हास्य व्यंग 'एशियाड़-82- आइए आप भी कुर्सी दौड़ में हिस्सा लीजिए' पढ़कर पेट में बल पड़ गए। अन्य स्तम्भ भी रोचक लगे। अगले अंक के इंतजार में··· । **तजेन्द्र भाटिया—विजय नगर**

दीवाना का अंक नं० 22 प्राप्त हुआ यह अंक ऐसे ही था जैसे अंधेरे में मनाई गई दीवाली, क्योंकि दीपावली विशेषांक में भी आपने दीवाना को काला ही रखा उसमें जो रंगों की चमक धमक होनी चाहिए थी। वह नजर नहीं आयी। सभी फीचर अच्छे थे।

एन०एस० भाटिया—सूर्य लंका

ठीक समय पर अंक न. 22 मिला। सभी फीचर अच्छे थे। खास करके **फीचर 'दीवाली का खर्च कम कैसे हो' में तो** आपने बहुत ही सही फामूले बताये। मैंने तो अभी से आजमाना भी शुरू कर दिया है। कृपया नये साल से इसे फिर से रंगीन कर दें। इसके लिए आपको दाम भी बढ़ाने पड़ें तो बढ़ा दीजिए।

जुगनू विक्की—कानपुर

मुख पृष्ठ पर

हम तुम कमरे में बन्द हों
और विल्लन आ जाये,
देख के तेरे सुन्दर तन को
अपना स्वैटर तंग बनाये।

दीवाना

अंक : 1 वर्ष : 19 1-14 जनवरी 1983

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

दाढ़ी मुई गृह सम्पति नासी

—गोबिन्द नारायण मिश्र

मुई दाढ़ी का उगना और रोज-बरोज बढ़ना एक बड़ी मुसीबत है। बिस्तर से उठे नहीं कि दाढ़ी की तीमारदारी शुरू हो जाती है। गरम पानी साबुन, ब्रुश, रेजर, ब्लेड, तौलिया, डेटोल, स्नो क्रीम, सारी चीजें खिदमत में हाजिर करो। नाश्ते में चाहे खाली चाय ही मिले चौखटे की सफाई के लिए सारी चीजें जरूरी हैं।महंगाई का हाल दाढ़ी जैसा ही है। अगर सरकार महंगाई भत्ता न बढ़ाये तो दाढ़ी की तीमारदारी ही बन्द हो जाये। गरीब बेचारा क्या करे। दाढ़ी तो बढ़ेगी ही। दाढ़ी ने दुनिया में क्या-क्या गुल खिलाये आप भी गौर फरमायें।

दाढ़ी और मूंछ का बिना बोये खर पतवार की फसल जैसे बढ़ना, फलना, फूलना, "नर नामक' जाति की खासियत है। दुनिया के हजारों लोगों ने दाढ़ी मूंछ की बदौलत नाम कमाया, इतिहास गवाह है।आज भी "गिनेश बुक आफ वर्ड रेकार्ड" में दाढ़ी बढ़ाने वालों का नाम छपना एक बड़ी बात है। दुनिया में लोग फुट से लेकर मीटर तक दाढ़ी बढ़ाने का रिकार्ड कायम कर चुके हैं। नर तो नर,नारियां भी यदाकदा इस देन को पाकर अपना नाम रोशन कर चुकी हैं। आज भी किसी-किसी नारी को दाढ़ी मूछ की देन उसके लिये एक बड़ी मुसीबत बन जाती है।

कहते हैं, ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। नर-नारी बनाया, नर को दी दाढ़ी मूछ और नारी को कामनीय रूप।आज बराबरी का अधिकार माँगने वाली नारियों को भी दाढ़ी मूछ दे देते तो ब्रह्मा का क्या बिगड़ता? अभी तो नारियां ही मरदों की दाढ़ी मूछ नोचा करती हैं। मर्द भी बदला ले लेते ब्रह्मा खुद भी दाढ़ी मूछ के शौकीन थे। उनकी विशाल लहराती हुई दाढ़ी और भव्य चेहरा "क्लीन सेव" देवताओं को भी नागवार गुजरा था और उन्होंने देव लोक में भी हंगामा खड़ा कर दिया था। किसी कवि ने उसका वर्णन किया है—

आदि समय देवताओं में यह विवाद उठा
देवताओं ने कहा-हम दाढ़ी मूछ मुड़वायेंगे
ब्रह्मा शिव, अश्विनी कुमार ने प्रतिरोध किया
हम अपनी दाढ़ी मूछ न गँवायेंगे।
क्लीन सेव देवताओं का हुआ ब्रहुमत—
बायकट कर दो इन मुछन्दरों का
जो इस सभ्यता की दिव्यता में न आयेंगें
ब्रह्मा न आज से विश्व में पूछे जायेंगे।
और न शिव को यज्ञ में बुलायेंगें।

इस प्रकार देव सभ्यता भी क्लीन सेव की कायल हो गई। ब्रह्मा बेचारे आज भी बहुत कम ही पूजे जाते हैं। भोले बाबा शंकर जी भले ही यज्ञ में न बुलाये जायें, दाढ़ी मूछ मुड़ाकर क्लीन सेव हो गये हैं।

इंसान ने धरती पर जन्म लिया ओर पहले लोहे की खोज की। हथियार तो बाद में बनाये उस्तरा पहले बनाया। नाईयों और हज्जामों की एक जाति बन गई। राजा और पंडित के बाद नाई का ही नाम लिया जाने लगा। उनकी प्रशंसा में शास्त्रों में लिखा है- "नाराणाम नापितो धूर्तः। "हिन्दूओं में दाढ़ी मूछ का मुड़ाना एक धार्मिक कृत्य बन गया।"

हिन्दुस्तान में मुगल साम्राज्य आया, मुल्लाओं और मौलवियों की दाढ़ियां देश भर में लहराने लगीं। बेचारी हिन्दू जनता धर्म सँकट में पड़ गई। धर्म की रक्षा के लिये गुरू गोबिन्द सिंह ने दाढ़ी मूछ को बड़ा महत्व दिया "मूछ नीची न होने पाये"। सवा लाख पर एक "सिक्ख" बना दिया। पंचकोर में केस को शामिल कर दिया और इस प्रकार हिन्दुस्तान में "सिक्ख" नामक जाति पैदा हो गई। फिर ऐसी फली फूली की आज दुनिया भर में अपनी पगड़ी और दाढ़ी मूछ से दूर से ही पहचान लिये जाते हैं।

अंग्रेज आये, अंग्रेजी सिपाही जो व्यापारी बन कर आये, रेजर और ब्लेड बेंचकरखुद हुक्मरान बन गये। हिन्दुस्तानियों को मूड़ने में उन्होंने कुछ भी कसर नहीं छोड़ी। हर हिन्दुस्तानी अब खुद ही अपनी दाढ़ी मूछ साफ करने लगा। हिटलर और मुसैगानिन के नाम पर हिटलर कट से लेकर तराजू कट तक मूछें रखने का फैशन आम हो गया। "सफाचट" रहने वालों की संख्या भी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी।

हिन्दुस्तान आजाद हुआ और भारत में दाढ़ी मूछों की एक खिचड़ी संस्कृति फलने फूलने लगी।राजपूती शान वाली मूछें गिने चुने इलाके में या डाकुओं और पुलिस वालों में पाई जाने लगीं। जिन्हें देखकर भारतीय ललनायें घूंघट को भूल (घूंघट रखती हों तब ना) दहशत से भर उठती हैं।

हाय री दाढ़ी! आम आदमी जहां चारों और मूड़ा जा रहा है। खुद अपने हाथों अपनी दाढ़ी रोज-रोज मूड़ने के चक्कर में घर की पूँजी गंवाता जा रहा है। पूंजी तो पूंजी अपनी औसत जिन्दगी का एक बड़ा हिस्सा 18 महीने का समय दाढ़ी मूछ की भेंट चढ़ा देता है। इस महँगाई में जिन्दा रहने के लिये कुछ न कुछ त्याग करना पड़ेगा। यही सोचकर मैंने दाढ़ी मूड़ना बन्द कर दिया है। अभी चन्द माह ही हुए हैं। खुजलाती हुई दाढ़ी देखकर पत्नी की पेशानी पर बल पड़ जाते हैं। बच्चे भी अब हमसे दूर-दूर ही रहते हैं। मुझे भी सबेरे-सबेरे कुछ लिखने-पढ़ने का समय मिल जाता है। मेरी दाढ़ी मूड़ो की बदौलत श्रीमती जी की प्रतिभा एक दिन यूं उजागर हुई—

प्राणनाथ! यदि नाखुश न हों तो इक बात पूछूं,
दाढ़ी-मूछ रखने में भला कौन लाभ पाते हो?
कोमल गुलाब से कपोल बतलाते हो,
पर तरस न खाते जब कांटे सी चुभाते हो।
गोया गाल नहीं, गलीचे किसी आफिस के
साफ करने को नित्य ब्रुश चलाते हो।
कहो,कौन-सा तरीका यह प्यार करने का,
जो नित घोड़ी की तरह खरहरा फिराते हो।

अब तो मेरे पास कहने और करने को यही बाकी रह गया है जैसा कि कबीर दास ने पहले ही कह दिया था।

दाढ़ी मुई गृह सम्पति नासी।
मूड़ मुंड़ाये भये संन्यासी॥


मोटू पतलू
डेंगू
कहानी एवं चित्रांकन : रघुबीर सिंह
सुबह-सुबह का समय है लोग भगवान का नाम ले रहे हैं और इधर मोटू चारपाई पर लेटा चिल्ला रहा है -
अरे कंगलों, भुखमरों, निकम्मो कहाँ मर गये सब के सब। आ- आ- अ- ऽऽऽऽऽ- आह!
हाय कोई कुछ तो बोलो! क्या सभी का बोलो राम हो गया है।
मोटू भईया, तुम्हारे गम और फिकर में ऐसे सोये के अभी-अभी आँख खुली हैं।
बोलोराम हो गया, मोटू का बोलोराम हो गया। हा-हा-हा- ऽऽऽऽऽ!
बेचारा अच्छा था!
अरे अंतिम समय मिट्टी के तेल का दीया तो जला दो।
अबे घनचक्करों बोलोराम हो तुम्हारे बापों का, तुम्हारे हजार-हजार दादों का, तुम्हारे नाना का, पड़नाना का, बोलोराम हो तुम्हारे मुहल्ले वालों का।
मैंने तो अभी दो हजार सात सौ साल और जीना था मगर मुझे किसी ने जादू-टोना करके नजर लगा दी है कि मैं मर जाऊँ!



तो मरजाओ न भईया। हम सब को क्यूँ बेआराम कर रहे हो।
नहीं, हमें अपने दोस्त के लिये नजर उतारने वाले बैगे को बुलाना चाहिये।
अरे कमबख्तो सात बोरी लाल मिर्चे साबुत डंडी वाली, और फिटकरी सात मन, सात किलो, सात छटांक, सात तोले, सात माशे, और सात रत्ती फिटकरी मेरे सर से सात बार वारकर आग में जला दो ताकि मेरी नजर उतर जाये।
अबे फोकट की औलाद इतनी मिर्चें और फटकरी के पैसे कहाँ से आयेंगे।
अरे घसीटू एक प्लान सूझा है। थोड़ी-सी लाल मिर्चें लेकर बनिये छज्जूमल की आँख में डाल कर उसकी सारी मिर्चें और फिटकरी उठा लायेंगे।
वाह अल्लाह तेरा बोलो राम करे! क्या धांसू प्लान है।
तो मजनुओं जाओ क्या सोच रहे हो। गुर्र-र्र-र्र ssssss अपने देश के होने वाले महान नेता को बचा लो।
अबे ओ गौड़से की औलाद। तू नेता कब से बनने जा रहा है? देश का महान वैज्ञानिक और डाक्टर तो मैं हूँ। मैंने कहा था साढ़े सात किलो पानी के साथ साढ़े सात किलो अजवायन दिन में साढ़े सात बार खा ले मगर तू लाल मिर्चं और फिटकरी के चक्कर में पड़ गया। वो भी करके देख ले।
कुछ घंटो के बाद मोटू के सर से लाल मिर्चें और फिटकरी वारकर आग में जला देते हैं।


मिर्चें जलने से सारे मुहल्ले वालों की आँखों से पानी और छींकों से बुरा हाल हो जाता है तो एक आदमी फायर ब्रिगेड वालों को फोन करता है।
अ-अ-अ-आ-आछी-ऽऽऽ।
अ--आ--आछीं।
हैलो, मोटू के घर ०/२ मुहल्ला कब्रिस्तान, गली सुनसान में आग लग गई है।
अ-अ-आ-आछीं।
थोड़ी देर में फायर ब्रिगेड वाले आग बुझाने आते हैं।
मोटू महल
नः ०/२, मुहल्ला- कब्रिस्तान, गली- सुनसान
आग बुझाते- बुझाते वो इतना पानी डालते हैं कि मोटू की चारपाई पानी के ऊपर तैरने लगती है। डूबने के डर से बचने के लिये घेला, डा० झटका, घसीटा और पतलू चारपाई के ऊपर बैठ जाते हैं।
बाहर से वो लोगों का शोर सुनते हैं कि इन्होंने सारे मुहल्ले का बुरा हाल किया है इन्होंने आग लगाई है। इनको जूते मारो और वो सब चारपाई पर बैठकर जंगल की ओर भाग जाते हैं।
चारपाई तैरती एक जंगल में पहुँच जाती है। तो मोटू चिल्लाता है -
उफ़! सर्दी लग रही है। कंबल लाओ। हाय! ठंड से मर गया। कंबल! अ-अ-अऽऽऽऽ आह!
अरे यहाँ कंबल कहाँ? कोई बबर शेर मिल जाये तो उसकी खाल उधेड़कर तुझे दे दूँ। पर इस रात के अंधेरे में वो भी दिखाई नहीं देगा।


पास ही से एक भालू जा रहा होता है। शेर की खाल उतारने वाली बात सुनकर घबरा जाता है और बेहोश होकर मोटू के ऊपर गिर पड़ता है।
ये इतने बहादुर हैं कि बबर शेर कि खाल उधेड़ देंगे। यदि मुझे देख लिया तो मेरा क्या हाल करेंगे?
वाह! मेरे दोस्त कितने अच्छे हैं। इस जंगल में भी मुझे कितना ऊनदार और वजनदार कंबल दिया है!
कुछ घण्टों के बाद सुबह होने लगती है तो डा० झटका कहता है –
अरे पक्षी बोल रहें हैं इसका मतलब सुबह हो रही है।
अबे मोटू उठ। इस जंगल में एक मौलवी है। चल तेरे को वहाँ से झाड़-फूँक करवा दें।
शायद तू ठीक हो जाये।
अबे कंबल बड़ा भारी है मुझ से उठाया ही नहीं जा रहा।
अरे मजाक छोड़। कंबल छोड़ कर आ जा।



अरे मैं तो कंबल छोड़ रहा हूँ पर कंबल ही मुझे नहीं छोड़ रहा।
जरा सूर्य उदय होने दो मैं अपने औजारों से कंबल के पाँच टुकड़े कर दूँगा ताकि एक-एक टुकड़ा हम आपस में बांट सकें।
रीछ ये सुनकर कि उसके पाँच टुकड़े होने वाले हैं, वह मोटू को छोड़कर फौरन भाग लेता है।
अरे कमबख्तों कंबल तो हवा से उड़ गया।
यहाँ कौन-सी तेरे बाप की मानसून चल रही है जिससे तेरा कंबल उड़ गया।
लगता है बुखार इसके सिर को चढ़ गया है। इसके सिर को आरी से काटकर देखना चाहिये।
अरे वो देखो हवा से नहीं उड़ रहा कंबल तो भाग रहा है।
तू ठीक कहता है झटके बुखार इसके सिर को चढ़ गया है। कुल्हाड़ी से इसका सिर काटकर बुखार निकाल दो।
झटकू को राय देने की जरूरत नहीं। वह समझदार है और जानता है सिर कुल्हाड़ी से काटना है या आरी से।


सुबह होने पर चारों मोटू को एक बड़े लकड़ी के तख्ते पर उठाकर मौलवी साहब के पास चल देते हैं और साथ-साथ ये भी कहते हैं - राम- नाम- सत्त है। राम - नाम - सत्त है।
राम नाम सत है।
भईया हम तो अभी प्रैक्टिस ही कर रहे हैं।
कसाइयों! तुम्हारा सवा सत्यनाश हो। किसका राम- नाम- सत कर रहे हो?
राम- नाम - सत है।
चुप करो वो देखो मौलवी साहब आ रहे हैं।
अरे नामाकूलों ये रास्ता मेरे घर को जाता है। कब्रिस्तान को नहीं।
मौलवी साहब हम आपके घर की ओर जा रहे हैं।
अरे कमबख्तों इस मुर्दे को मेरे घर क्यूँ लिये जा रहे हो?
अबे मौलवी मुर्दा तू, मुर्दा तेरे बीवी-बच्चे। तेरे सारे खानदान का राम-नाम-सत हो।
बेअदब, हमारे आगे जुबान चलाता है। मैं मौत के यमदूतों को हुक्म देता हूँ तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को यम-पुरी ले जायें।
मौलवी के इतना कहते ही एक यमदूत प्रकट होता है।
ऐ अल्लाह के नेक दिल बन्दे। हम आप की सेवा में हाजिर हैं। आप हुक्म करें इन पाँचों नामाकूलों को जिन्दा ही धर्मराज के पास ले जाएँ या इनके शरीरों को छोड़ कर आत्माओं को ले जाएँ।


यमदूत की बातें सुनकर मोटू गुस्से से चीख उठता है -
अबे इस हुक्के की औलाद से क्या पूछता है पहले हमसे तो पूछ, हम जाने को तैयार हैं।
आप तैयार हो या ना हो। मौलवी साहब का हुक्म है, हम तुम्हें यमपुरी ले जायें।
अरे इसने मुझे हुक्के की औलाद कहा। इन पांचों को शरीर समेत धर्मराज के पास ले जाओ। गुर्र-र्र-र्र......
जो हुक्म मौलवी साहब, मैं इनको अभी मूर्छित करता हूँ। ये पाँचों अपने आपको शरीर समेत होश आने पर यमपुरी में पायेंगे।
यमदूत फूंक मारकर बेहोश करके उन पाँचों को यमपुरी ले जाता है।
थोड़ी देर के बाद होश आने पर पांचो अपने आप को एक आलीशान गेट के बाहर खड़ा पाते हैं। वो ये देखकर बहुत खुश होते हैं कि द्वारपाल यमदूत पर रोब जमा रहा है।
तुम दुनिया के सबसे मूर्ख, बेईमान, धोखेबाज, चालाक और मक्कार आदमियों को शरीर समेत धर्मराज के पास ले जाने के लिये आये हो।
ये मौलवी साहब का हुक्म है।
अबे चिड़ीमार तूने हमको इतने खिताब दिये हैं। यदि हम तुझे एक थप्पड़ रसीद करें तो तू सीधा पाताल लोक पहुँच जाये।
ओय, यमराज दी औलाद। अब हमें यहाँ लाये हो तो दिखाओ अपना धर्म राज।
हाँ, जरा धर्मराज से भी दो-दो हाथ हो जायें।
भाइयों घबराओ नहीं, कहो तो सामना होते ही धर्मराज का मैं झटका कर दूँ।
ये पाँचों धर्मराज के दरबार में क्या-क्या कारनामे करते हैं? क्या वह दुबारा पृथ्वी पर शरीर समेत आ सके या नहीं? ये सब जानने के लिये अगले अंक में पढ़िये।

जूता सलामत रहे



गोविंद नारायण मिश्र

लखनऊ की एक उमस भरी शाम। हजरत गंज की भीड़-भाड़ में इधर-उधर ताकता चला जा रहा हूं कि पीछे से आवाज सुनाई पड़ती है—'हुजूर का जूता सलामत रहे।' पीछे मुड़ता हूं—एक फकीर खड़ा है। मेरी ओर हथेली फैलाये हुये। एक बार उसे गौर से देखता हूं दुबारा अपने फटेहाल जूतों को। कुछ सोच कर उसे दस का सिक्का पकड़ा देता हूं। अब मेरी निगाहें इधर-उधर दुकानों की ओर न पड़कर चलते हुये लोगों के जूते और जूतियों पर पड़ती हैं। खुश हो उठता हूं मैं। दो-चार फटेहाल ही सही, मगर सबके पैरों में जूते-जूतियां सलामत हैं। इसका मतलब देश खुशहाल है।

जूतों की सलामती और देश की खुशहाली एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जूता हमारे देश की शान है, पुरानी धरोहर है। चरणपादुका सिंहासन पर बिराजमान हों, तो देश में रामराज्य का आना स्वाभाविक है। भरत ने, राम की चरणपादुका 14 वर्ष तक राज सिंहासन पर रखकर राम राज्य की नींव डाली थी। भगवान राम बेचारे बिना चरण-पादुका 14 वर्ष तक वन-वन घूमते रहे। तभी से भारत में चरण पादुका संस्कृति का उद्भव माना जाता है। आप मानें न मानें, दुनिया मानने लगी है कि अमन और चैन कायम रखने के लिए जूता एक लाजवाब नुस्खा है। भारत में दुबारा 'रामराज्य' तभी सम्भव है, जब सत्ता का जूते पर एकाधिकार हो, 'चरण पादुका' जनता पर शासन करे। अशांति, अव्यवस्था, भ्रष्टाचार को देश से भागते देर नहीं लगेगी। चरण पादुका संस्कृति ने उद्भव से लेकर आज तक भारत में नए-नए आयाम ग्रहण कर हजारों वर्षों से किस कदर प्रभावित किया है। इसका विस्तृत अध्ययन नया इतिहास लिखने के लिये जरूरी है। सामन्त वादी युग में जिसका जितना बड़ा जूता होता था उसका उतना ही बड़ा राज्य होता था। आपस में ही 'जूता प्रकरणों' की भरमार से धीरे-धीरे इतिहास से उनका नाम ही लुप्त हो गया।

मुगल आये। बादशाहतें एक के बाद एक बदलती चली गईं। उसी प्रकार जूते-जूतियां भी बदलते रहे। हीरे-पन्ने, लाल और असली मोतियों से जूते-जूतियों को सजाने की परम्परा बन गई। जूते-जूतियों की कद्र इतनी अधिक बढ़ी कि सैंकड़ों वर्ष तक मुगलों ने हिन्दुस्तान पर हुकूमत की। अंतिम बादशाह बहादुर शाह 'जफर' जूतियों को उतार कर हरम के भोग विलास में हरदम लिप्त रहने लगा। अंग्रेजों की फौज जूते खटखटाते महल के भीतर तक घुस आई। खबर पाते ही उसने पलंग के नीचे पैर रखा—जूतियां नदारत थीं। दास-दासियां जब तक जूतियां तलाशते, अंग्रेजों ने उन्हें बन्दी बना लिया और बिना जूती के ही लाल किले में जाकर कैद कर दिया।

फिर हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के बूट चरमराने लगे। सारे नवाब, राजा, रेहा-राजा उनके सामने सिर झुकाने लगे। अंग्रेज कौम जूतों की बड़ी शौकीन थी। धूल का एक कण भी उनके जूतों पर दिखाई पड़ना मुश्किल था। हर समय चमाचम चमकते हुए। सुबह उठते ही जूतों की पूरी फौज को झाड़-पोंछ कर पालिस लगाना और चमाचम चमकाना, इतना की उसकी टो में चेहरा दिखाई पड़ने लगे, उनका रोज का नियम था। अंग्रेजों का जूता प्रेम चरम सीमा पर था। घूमने का अलग, खेलने का अलग

शिकार का अलग, बाथरूम का अलग, लंच और डिनर का अलग तथा बेडरूम का अलग। मतलब यह कि हर काम और हर खास समय के लिए अलग-अलग जूते रखना उनकी संस्कृति थी। आज भी किसी अंग्रेज का जूता देखकर समाज में उसकी हैसियत बताई जा सकती है।

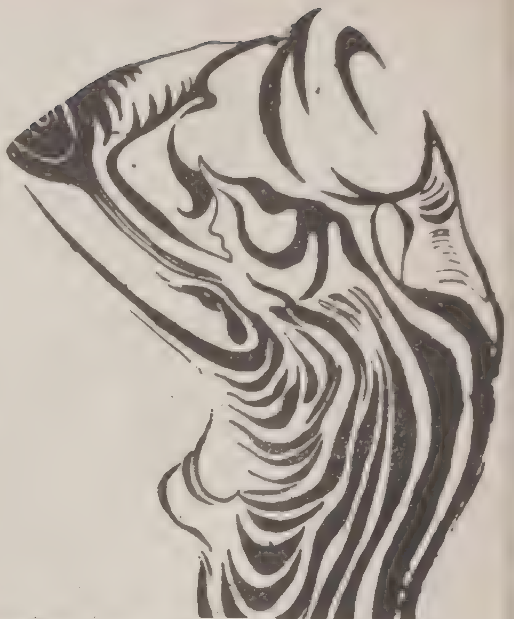
भारत का आम नागरिक जो सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा, जूतों का प्रयोग पैरों की रक्षा के लिये कम, इज्जत के लिए अधिक रखता था। विदेशों में शिक्षित भारतीयों ने स्वतंत्रता का महत्व समझा और 'जिसका जूता उसी का सिर' वाली कहावत पर अमल करते हुए अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह का झंडा गाड़ दिया। हिंसक और अहिंसक क्रांतियां हुयीं। जंगे आजादी के दिवाने अंग्रेजों पर जूता उछालते ही रहे। अंततः अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और भारत आजाद हुआ।

अंग्रेजों ने वरासत में भारतीयों को अंग्रेजी, अंग्रेजियत और जूता संस्कृति सौंपा जिसे आज भी हर भारतीय गले से लगाने को आतुर है। आम सड़क से लेकर संसद तक जूता प्रकरण होने लगे। भारत के जूता उद्योग ने बड़ी प्रगति की है। आगरा और कानपुर इस क्षेत्र में जूतों के नगर कहे जाने लगे। भारत के जूते विदेशों में भी लोकप्रिय हो गये और अन्तरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय जूतों की खपत दिनों दिन बढ़ रही है।

मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, महफिल, मजलिस और बरातों में यदि आप शामिल हों और जूता उतारने की नौबत आये तो अपनी एक नजर जूतों पर रखियें अन्यथा चुरा लिये जाने और बदल जाने के मौके आम तौर पर देखे जा सकते हैं। जरा सी आँख चूकी और किसी भी जगह से आप के जूते गायब हो जाना एक साधारण बात है। फटेपुराने जूते, जूतियां भी अब बेकार नहीं फेंके जाते। कवि सम्मेलनों के हर कवियों पर फेंकने और नामवर व्यक्तियों को खास मौकों पर पहनाने के काम आ में जाते हैं। घिसे पिटे जूते दूसरों पर फेंक कर मारने में और ही मजा है। भारत में आज भी शादी के अवसर पर दूल्हे से उसी के जूते पुजाये जाते हैं, यह नेक काम साली सरहजों की कृपा से आसानी से हो जाता है। इसका मकसद शायद यही है कि शादी के बाद "मियाँ की जूति, मियाँ का सिर" कहावत चरितार्थ न हो। एक प्रसिद्ध दार्शनिक ने कहा कि "तंग जूता पहिनिये, इसे पहिन कर आदमी दुनिया भर की मुसीबतों और कष्टों को भूल जाता। यदि आप परेशान हैं और दुखों से निजात पाना चाहते हैं तो जरूर इस पर अमल कीजिए।

आज आपका जूता सलामत हो, न हो, दूसरों का जूता देखिए जिसका जितना बड़ा जूता हो उसकी उतनी ही बड़ी पालिश कीजिए।आप के सारे काम फतह हो जायेंगे। जूते भी सलामत और सिर भी सलामत। शायद इसी लिए उस फकीर ने दुआ की थी "हुजूर का जूता सलामत रहे'। ●

एशियाई खेल और फैशन



एशियाई खेल सफलतापूर्वक समाप्त हुए और खेलों के प्रति लोगों की बहुत रुचि जागी। इन खेलों के फैशन पर पड़ने वाले कुछ सम्भावित प्रभावों पर दीवानी नज़र—



स्पोर्टस निकर पहनकर लड़कियाँ ज्यादा ठंड़ी आहें भरवाकर वातावरण में ठंडक ला सकेंगी।

टी शर्टों पर सीधी समानान्तर धारियों के स्थान पर टेढ़ी धारियों को ज्यादा लोकप्रियता मिल सकती है। चीनी जिमनास्ट लड़कियां ऐसी ही शर्ट पहना करती थीं।





चीनी वालीबाल टीम के जर्सियों के डिजायन की नकल पर नए टी शर्ट।



बिन्दी का नया रूप।



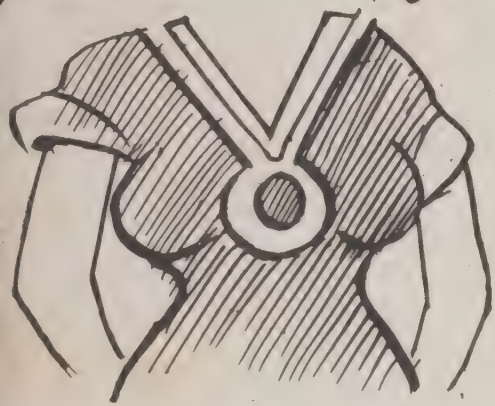
जंतरमंतर कैप



तीरन्दाजी के तरकश की नकल पर हैंड बैग। इसमें महिलायें बेलन रखकर कमर में बांध सकेंगी।



नाइटी के कंधों का पफ [illegible] के [illegible] की नकल पर ।



मेडल के नमूने पर बना नेक लाइन।



सात की संख्या लोगों के दिलों में दहशत पैदा करेगी। भारत सात गोल से हॉकी में हार गया था न।



पड़ोसी के बगीचे से टमाटर चुराने जाते समय दीवार पर खड़े होकर पैरेलल बार पर एक्सरसाइज की नकल। कोई देखेगा तो सोचेगा कसरत हो रही है।



साइकिल वेलोड्राम केश सज्जा

दुम दुम कुदी

'गुड बाई, प्रिये ।'
'गुड बाई डार्लिंग ।'

निशारानी फाटक पर झुकी हुई अपने पति की दूर होती आकृति को सड़क पर गांव की ओर जाते निहार रही थीं ।

कुछ ही समय के बाद वे सड़क पर मुड़े और आँखों से ओझल हो गये, पर निशा खोई सी अपने बालों की झूमती लट को संवारते हुए कुछ देर और इसी अवस्था में खड़ी रही ।

निशारानी सुन्दर नहीं थी,वैसे कहा जाय तो उनके चेहरे पर कोई आकर्षण भी नहीं था पर उसका चेहरा एक ऐसी नारी का चेहरा था जो अपनी जवानी के पहले चरण में होकर भी उज्जवल और कोमल न था जिसे उसके पुराने सहयोगी भी आसानी से पहचान न पाते थे। निशारानी एक साफ सुथरी कार्यकुशल नवयुवती थी जो सुव्यवस्थित और व्यवहार में कुछ कड़क थी।जाहिर है वह समर्थ और व्यवहारिक भी थी ।

निशा को शिक्षा कठिन रूप से प्राप्त हुई थी, अट्ठारह वर्ष की आयु से तेंतीस वर्ष की आयु के बीच के पन्द्रह वर्ष उसने अपनी और सात वर्ष तक अपनी बीमार माँ की देख भाल की जिम्मेवारी एक शार्टहैन्ड टाइपिस्ट का कार्य कर निभाई थी । जीवित रहने की जद्दोजहद ही उसके चेहरे की बचपने की कोमलता को सख्त करने का कारण थी ।

यह सच है, कि निशा के जीवन में भी एक प्रकार का रोमांस आया—एक दयालु सहयोगी क्लर्क देवेनराय का । हृदय से नारी सुलभ निशा को न जानते हुए भी ज्ञात था कि देवेन को उसकी परवाह है । बाहरी तौर पर वे दोनों केवल मित्र थे । अपनी थोड़ी सी तनख्वाह में से ही देवेन को अपने छोटे भाई की शिक्षा का भार उठाना पड़ रहा था इसी कारण इस समय तो विवाह के बारे में देवेन सोच भी नहीं सकता था ।

और फिर अचानक लड़की को जीवन में रोजमर्रा को जद्दोजहद से छुटकारा मिला, एक बहुत ही अनसोचे तरीके से । निशा की एक दूर के रिश्ते की बहन अपना सारा धन निशा के नाम छोड़ परलोक सिधार गयी थी कुछ लाख रुपये ! जिनमे हर वर्ष कुछ हजार रुपये की आमदनी निश्चित थी । निशा के लिये यह थी आजादी, जीवन और स्वतन्त्रता, अब उसे और देवेन को शादी के लिये प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं थी ।

परन्तु देवेन का व्यवहार अनपेक्षित था—उसने पहले भी कभी निशा से खुले तौर पर अपने प्रेम का इजहार नहीं किया था और अब तो वह ऐसा करने का और भी कम इच्छुक प्रतीत होता था वह निशा से कतराने लगा और दुःखी और उदास दिखने लगा । निशा ने सच को भांप लिया, अब यह एक पैसे वाली युवती हो गई थी । हिचकिचाहट और स्वाभिमान देवेन को उसे अपनी पत्नी बनने को कहने में रास्ता रोके था ।

उसे देवन का यह व्यवहार कुछ बुरा नही लग रहा था उल्टी निशा इस सोच में पड़ी कि क्या वह स्वयं ही पहला कदम बढ़ाये कि उसके जीवन की दूसरी अप्रत्याशित घटना घटी ।

एक दोस्त के घर निशा की भेंट राकेश मोहन से हुई । वह तुरन्त ही निशा पर रीझ गया और उससे प्रेम करने लगा, यहाँ तक कि एक सप्ताह के भीतर ही दोनों की सगाई हो गई । निशा स्वयं को प्यार व्यार करने वाली लड़की नहीं समझती थी, परन्तु वह स्वयं पर काबू न रख सकी । अनजाने में उसने अपने पहले प्रेमी को भी नाराज कर दिया था, देवेन गुस्से और नाराजगी से भरा हकलाता सा उसके पास आया ।

'वह आदमी तुम्हारे लिये पूरा अजनबी है । तुम उसके विषय में कुछ भी नहीं जानतीं ।'

'मैं केवल जानती हूं कि मुझे उससे प्रेम है।'

'यह तुम कैसे जान सकती हो—केवल एक सप्ताह में' 'हर व्यक्ति को यह जानने के लिये कि उसे किसी लड़की से प्रेम है ग्यारह वर्ष नहीं लगते, 'निशा ने गुस्से से उत्तर दिया ।' देवेन का चेहरा एकदम सफेद हो गया ।

'जब से मैं तुम से मिला हूं मैंने हमेशा तुम्हारी परवाह की है, मेरा ख्याल था तुम्हें भी मेरी परवाह है ।'

निशा ने सच्चाई से कहा-—

मेरा भी ऐसा ही ख्याल था, पर यह जब की बात है जब मुझे मालूम ही न था प्रेम कैसा होता है ।'

देवेन एक बार फिर फूट पड़ा, प्रार्थना मनाना,यहाँ तक की धमकी भी दी—धमकियां उस पुरुष के खिलाफ जिसने उसका स्थान ले लिया था । निशा के लिये भी देवेन का यह व्यवहार अनोखा और अजीब था क्योंकि देवेन बाहर से एकदम शान्त था और निशा समझती थी वह देवेन को बखूबी जानती है ।

उसका ध्यान एक बार फिर उस इन्टरव्यू की ओर गया था।आज की धूप से चमकती सुबह को उसने अपने घर के गेट पर झुके हुए अपने अतीत के विषय में सोचा था । निशा के विवाह को एक माह हो गया था और वह अत्यन्त खुश थी । फिर भी अपने पति की क्षणिक गैरहाजिरी में चिन्ता की झलक सी उभर आई थी उसके मन में, और उस चिन्ता का कारण देवेनराय था ।

अपने विवाह के बाद उसने तीन बार

एक ही स्वप्न देखा था। वातावरण भिन्न होते हुए भी पुरुष और तथ्य हूबहू वही के वही थे। उसने अपने पति को मृत पड़ा देखा और देवेन राय को उसके निकट खड़े देखा, साथ ही उसे पूरी तरह स्पष्ट रूप से यह मालूम था कि देवेन राय ने ही मारने वाला आघात किया था।

चाहे यह बहुत ही भयानक था पर इससे भी भयानक कुछ और था और वह था कि स्वप्न में ही, जागने पर वह निशा रानी अपने पति की मृत्यु से प्रसन्न थी : उसने कृतज्ञ हाथ खूनी की ओर बढ़ाये, कभी कभी तो उसने उसे धन्यवाद भी दिया। स्वप्न हर बार एक ही प्रकार समाप्त हुआ, वह देवेन राय की बाहों में होती थी।

इस स्वप्न के विषय में उसने अपने पति से कभी कुछ नहीं कहा था, परन्तु गुप्त रूप से इसने उसे काफी परेशान किया हुआ था, चाहे वह इस बात को मानती नहीं थी। क्या यह एक चेतावनी थी—एक चेतावनी देवेनराय से सावधान रहने की।

निशा का ख्यालों से ध्यान टेलीफोन की तेज घंटी से टूटा, टेलीफोन घर के भीतर था. उसने भीतर जा रिसीवर उठाया, अचानक वह गिरते-गिरते बचीं, उसने दीवार का सहारा लिया।

'कौन आपने अपना नाम क्या बताया ?

क्यों, निशा क्या बात है ? तुम्हारी आवाज को क्या हुआ ? मैं पहचान नहीं पाया, मैं देवेन हूं।'

'ओह। निशा बोली, 'ओह कहां— तुम कहाँ हो ?'

ट्रैवलर्स इन में, क्यों यही सही नाम है न ? या तुम्हें अपने गाँव के शराबखाने के वजूद का भी पता नहीं ? मैं छुट्टी पर आया हूं। कुछ फिशिंग कर रहा हूं। रात के खाने के बाद मैं तुम दोनों भले लोंगों के पास आऊं तो कोई ऐतराज तो न होगा ?

'नहीं, निशा ने तेजी से कहा, तुम्हें नहीं आना चाहिये, क्षमा करना, क्या कहा 'उसने औपचारिक रूप से पूछा, बेशक मैं तुम्हें परेशान नहीं करूंगा—

निशा ने जल्दी से बात बदली, उसे उसका व्यवहार बहुत ही अजीब लगा होगा, व्यवहार था ही अजीब। उसकी नसें सब टुकड़े-टुकड़े हुई जा रही थीं।

'मेरा मतलब था आज तो हमें कुछ काम है, क्या तुम कल रात को खाने पर नहीं आ सकते ?' निशा अपनी आवाज सम्भालते हुए बोली।

परन्तु देवेन ने सहायता की कमी महसूस कर ली थी। 'धन्यवाद बहुत-बहुत धन्यवाद', वह उसी प्रकार औपचारिक रूप से बोला, 'परन्तु मुझे किसी भी समय यहां से चला जाना होगा, बस मेरे एक मित्र के आने की बात है। 'गुड बाई निशा', वह कुछ देर रुका फिर दूसरी आवाज में बोला, मेरी शुभकामनायें तुम्हें प्रिये।'

निशा ने राहत की सांस ले रिसिवर को रखा, 'उसे यहां नहीं आना चाहिये, वह स्वयं से बोली, 'उसे यहाँ नहीं आना चाहिये। ओह ! मैं कितनी मूर्ख हूं, मैं अपने को किस स्थिति में कल्पना कर बैठी। कुछ भी हो मुझे खुशी है कि वह नहीं आ रहा।

मेज पर पड़ा स्कार्फ उठा वह बाहर बाग में निकल आई। निकलते-निकलते उसकी निगाह घर पर लगी नाम की तख्ती 'बुलबुल कुटी' पर पड़ी। अपने विवाह से पहले उसने एक बार अपने पति राकेश से कहा था' कैसा अनोखा नाम है' और वह हँस पड़ा था।

उसने प्यार से कहा था, 'ओह प्यारी सी चिड़िया' 'मुझे पूरा विश्वास है तुमने बुलबुल का गाना पहले कभी नहीं सुना होगा। बड़ी अच्छी बात है बुलबुल को प्रेमियों के लिये ही गाना चाहिये। हम दोनों ही मिलकर गर्मी आने पर उसका गाना साथ-साथ अपने घर के बाहर सुनेंगे।

यह याद कर की वाकई उन दोनों ने कोयल को गाते सुना था वह दरवाजे में खड़ी प्रसन्नता से लाल हो उठी।

बुलबुल कुटी राकेश ने ही ढूंढ़ी थी। वह खुशी से फूला हुआ निशा के पास आया था। उसने अपने लिये एक बहुत ही सुन्दर स्थान, एक स्वर्ग, जीवन का

शेष पृष्ठ ३१ पर

मदहोश



नए वर्ष के

बधाई कार्डों

के दीवाने रूप

अपने धोबी को बधाई पत्र

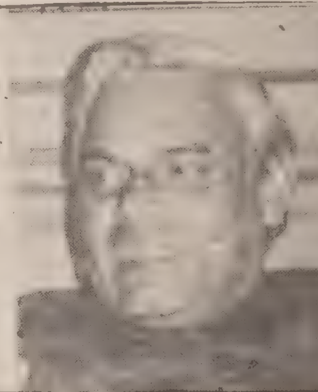
नए वर्ष में
आपके दुख
टूटें जैसे हमारी
बटन

ऐसे ही
कमीजों के
टूटते हैं !

विरोधी नेता का जनता को बधाई पत्र

नव वर्ष आपके लिए
अमंगल कारी हो

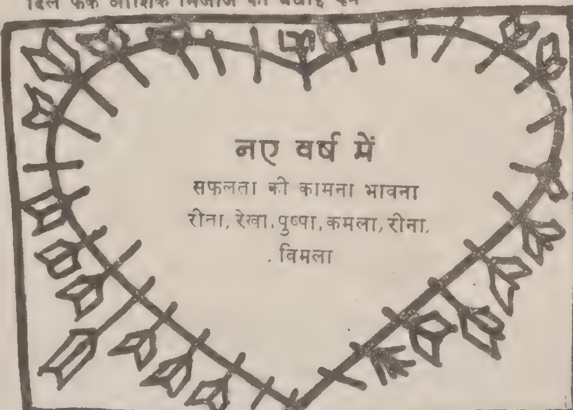
ताकि हम उसके लिए सरकार
को दोषी ठहरा सकें ।



मतगणना अधिकारी को बधाई पत्र

नए वर्ष में
खुशियों की गमों पर
भारी बहुमत से विजय की
कामना सहित

दिल फेंक आशिक मिजाज को बधाई पत्र



नए वर्ष में
सफलता की कामना भावना
रीना, रेखा, पुष्पा, कमला, रीना,
. विमला

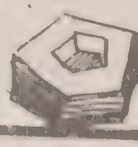
एक व्यापारी का दूसरे व्यापारी को बधाई पत्र

नया साल
लाभमय हो

नोट—ऊपर वाला कार्ड केवल दूसरों को दिखाने के लिए है । असली बधाई संदेश का कार्ड नम्बर दो नीचे है । अकेले में पढ़ना ।

रद्दी वाले का बधाई पत्र दूसरे रद्दी वाले को

नया वर्ष
जल्दी ही पुराना हो
की शुभ कामना
ताकि हम उसे खरीद सकें रद्दी के भाव



परिवार नियोजन कर्मचारी को बधाई पत्र

नये वर्ष की
बधाई
बधाई
बधाई

बस

अपने आंखों के डाक्टर को बधाई पत्र

नया वर्ष

मुबारक

पोस्टमैन को बधाई पत्र

नया वर्ष

आपके जीवन में

खुशियां लाये

आपके हिस्से के दुख गलती से दूसरों के भाग्य के लैटर बक्स में पड़ जायें।

जय संतोषी मां के भक्त का बधाई कार्ड

नव वर्ष १९८३ की

बधाई

नोट—आप एक सौ ऐसे ही कार्ड छपवा कर अपने मित्रों को मेरी तरफ से भेजें। अग ..र ऐसा न किया तो आप पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ेगा।

एक सहेली का दूसरी को बधाई पत्र जिसकी मंगनी हो चुकी है।

नया वर्ष १९८३

के सूत्र

मंगलमय

होने की कामना

शराबी को बधाई पत्र

नया वर्ष ... हिच

कौन सा साल है यह साला ... हिच

हां ... १९८३ ... नहीं, नहीं ... १९८३

मुबारक हो ... हां ...

नो ड्राई डेज

लड़कियां छेड़ने वाले को बधाई पत्र



बूट पालिश वाले को बधाई पत्र

नये साल

१९८३

की

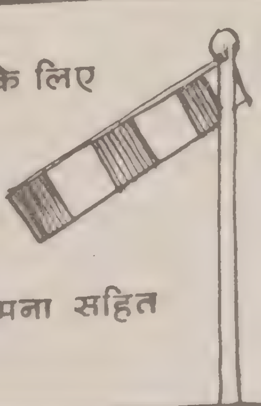
उज्जवलता

की कामना

जैसे क्रीम पालिश कर रही हो

रेल कर्मचारी को बधाई कार्ड

नए वर्ष में खुशियों के लिए



लाईन क्लीयर

सिगनल डाउन की कामना सहित

क्यों और कैसे

प्र० : सैटलाईट या उपग्रह अन्तरिक्ष में रह क्यों जाता है ?

उ० : एक उपग्रह उसकी मोटर बंद कर दिए जाने के बाद भी पृथ्वी के चारों ओर अपनी कक्षा में रहता है। इसका यह कारण नहीं है कि उपग्रह को गुरुत्वाकर्षण के क्षेत्र से ऊपर भेज दिया जाता है, बल्कि उसकी अपकेन्द्री शक्ति पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की ताकत को बराबर करती है।

उपग्रह को अन्तरिक्ष में पहुंचाने के लिये उसे ऊपर उठाने की शक्ति की आवश्यकता होती है जैसे राकेट जो उपग्रह को तेजी से इतनी ऊँचाई तक पहुंचा दे कि वह अन्तरिक्ष में पृथ्वी के चक्कर लगाने लगे, वह भी एक खास ऊँचाई पर और अनिश्चित काल तक। अन्तरिक्ष में उपग्रह की गति कम करने के लिए कोई वायु नहीं है।

क्योंकि पृथ्वी की सतह से दूरी बढ़ने के साथ गुरुत्वाकर्षण की खींच कम होती जाती है—आवश्यक—गति उसकी अन्तरिक्ष क्षेत्र में वेग भी घटता जाता है। 200 मील की ऊंचाई पर 17,200 मी० प्रति घंटे की कक्षिय गति की आवश्यकता होती है और लगभग 22000 मील पर आवश्यक गति से उपग्रह 24 घंटे में एक चक्कर पूरा कर लेगा और इस प्रकार पृथ्वी के साथ-साथ घूमेगा और अन्तरिक्ष में अपना एक ही स्थान बनाये रखेगा।

प्र० : ग्लास फाईबर क्या है ?

उ० : ग्लास फाईबर कांच या ग्लास के बहुत ही बारीक रेशों का समूह है, जब साधारण कांच के रेशे बुन लिए जाते हैं तो वह बहुत ही मजबूत और मोड़ने लायक होता है जो कि साधारण कांच की वस्तुओं के विपरीत जो सख्त और कड़क कर टूटने वाली होती हैं।

कांच के इन सिल्क नुमा रेशों से कपड़ा बनाया जा सकता है या इन्हें रुई के गोलों के समान एकत्रित किया जा सकता है। कांच के रेशे सड़ते या गलते नहीं हैं। यह एक अच्छे इन्सलेटर होते हैं पर एक बुरा विद्युत चालक है। ग्लास फाईबर मेटिरियल से बने कपड़े के परदे सूरज के प्रकाश से खराब नहीं होते, साथ ही सीलन का भी इन पर कोई प्रभाव नहीं हो पाता। अब क्योंकि रंगने की टेकनिकल समस्यायें सुलझाई जा चुकी हैं ग्लास फाईबर मेटिरियल पर रंगाई छपाई का काम भी किया जा सकता है।

अधिकतर प्लास्टिक जोर पड़ने या गिरने से कड़क अथवा मुड़ जाती है परन्तु इनमें ग्लास फाईबर मिला देने से एक बहुत ही हल्की और उपयोगी तथा मजबूत वस्तु का निर्माण होता है। ग्लास फाईबर ठीक उसी प्रकार शक्ति बढ़ाता है जैसे सीमेंट कंकरीट को शक्ति प्रदान करने के लिये लोहे की सलाखों का प्रयोग किया जाता है।

ऐसे मिश्रण तैयार कर इनसे वायुयान के भाग, मोटरों की बाडी, बोट तथा मछली पकड़ने की रोड को बनाया जाता है। ग्लास फाईबर के खुरदरे मैट से फिल्टर तथा 'वाशर' बनाये जाते हैं तथा इस मेटिरियल के बने कम्बल शरीर की गर्मी को बचा कर रख, सोते समय शरीर को अधिक गर्मी पहुंचाता है।

प्र० : लाइट ईअर या प्रकाश वर्ष क्या होता है ?

उ० : प्रकाश वर्ष नाप की एक इकाई है जो खगोलज्ञों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है और यह इकाई प्रकाश की एक वर्ष में पूरी की गई यात्रा का नाप भी यह दूरी लगभग 6000,000,000 मील है। प्रकाश की गति 186,000 मील प्रति सैकेन्ड से कुछ ही अधिक है।

खगोलज्ञों ने प्रकाश वर्ष इकाई का प्रयोग इसलिये शुरू किया क्योंकि साधारण नाप की इकाइयों अन्तरिक्ष की विशाल दूरियों को नापने में व्यवहार में लाये जाने अत्यन्त कठिन प्रतीत होते हैं।

प्रकाश वर्ष के तरीके को अपना, वैज्ञानिकों ने 'आकाश गंगा' को नापा है ऐसा अनुमान है कि 'आकाश गंगा' की चौड़ाई लगभग 100,000 प्रकाश वर्ष होनी चाहिए।

कुछ तारों के प्रकाश को हम तक पहुंचने में लाखों वर्ष लग जाते हैं। 'ऐन्डरोमेडा' पृथ्वी से लगभग 1,800000 प्रकाश वर्ष की दूरी पर है, हालांकि हम इसे सीधे आंख से ही देख लेते हैं।

हमारा सबसे करीबी तारा 'प्रोक्सीमा सेन्टूरी लगभग चार प्रकाश वर्ष दूर है जबकि सबसे तेज चमकने वाला 'सिरस' (डोग स्टार) हमसे साढ़े आठ प्रकाश वर्ष दूर है।

प्र० : संसार की सबसे पहली सुपर सोनिक फ्लाईट कब और कहां प्रारम्भ हुई थी।

उ० : सबसे पहली बार जबकि चालक युक्त वायुयान ने ध्वनि की गति को लैवल फ्लाईट में पार किया था, वह था 14 अक्तूबर सन् 1947 और इस विमान के चालक थे यूनाईटेड स्टेट्स के एयर फोर्स के केप्टन चार्ल्स ई. येगर। इन्होंने राकेट प्रोपैलड अमरीका के खोज विमान बैल X—1 को 42,000 फुट की ऊँचाई पर अमरीका के ऐडवर्ड एयर फोर्स बेस, मुरोक, केलिफोर्निया पर मैच 1.015 (670 मील प्रति घंटे) की गति से उड़ाया था।

ग्लैमरस ग्लैन्निस के नाम से जाना जाने वाला संसार का यह सबसे पहला खोज विमान था। इस विमान से अधिक से अधिक प्राप्त करने की ऐयरो-डायनामिक्स खोज की जाती थी।

यह एक सिंगल सीटर विमान था जिसकी सतह के साथ लगी प्रेशराइज्ड केबिन थी।

सन 1946 में X—1 से बहुत से टेस्ट किये गये, जिनके दौरान इस विमान को बोइंग बी-29 सुपर फोरटरैस से छोड़ा गया था और पृथ्वी पर उतरने दिया गया था। एक बार 9 दिसम्बर 1946 को भी यह विमान ऐसे गिराये जाने पर अपनी शक्ति से उड़ा था। परन्तु इस विमान की अपनी स्वयं की शक्ति के आधार पर की पहली उड़ान 5 जनवरी 1949 से पहले न हो सकी थी।

ग्लैमरस ग्लैनिस, इस समय स्मिथ सोनियन इन्सटीट्यूशन के नेशनल एयर और स्पेश म्यूजियम में वाशिंगटन डी. सी. में सुरक्षित रखा है।

खेल खेल में

भारत-पाक क्रिकेट आंकड़े

(इस श्रृंखला से पहले)

● पारी में अधिकतम रन—भारत : पाकिस्तान में 465 (लाहौर 1978-79) भारत 439|9 पारी घोषित (मद्रास 1960-61), पाकिस्तान : भारत में 448|8 पारी घोषित मद्रास (1960-61) पाकिस्तान में 539|6 पारी घोषित (लाहौर, 78-79)।

● पारी में न्यूनतम रन—भारत : पाकिस्तान में 145 (कराची 54-55) भारत में 106 (लखनऊ 52-53); पाकिस्तान : भारत में 150 (दिल्ली 52-53), पाकिस्तान में 158 (ढाका 54-55),

अधिकतम व्यक्तिगत स्कोर—भारत : पाकिस्तान में 145 विश्वनाथ (फैसलबाद 78-79) भारत में 177 (नाबाद) चंदू बोर्डे (मद्रास 60-61,) पाकिस्तान : भारत में 160 हनीफ मुहम्मद (बंम्बई 60-61) पाकिस्तान में 235 (नबाद) जहीर अब्बास (लाहौर 78-79)

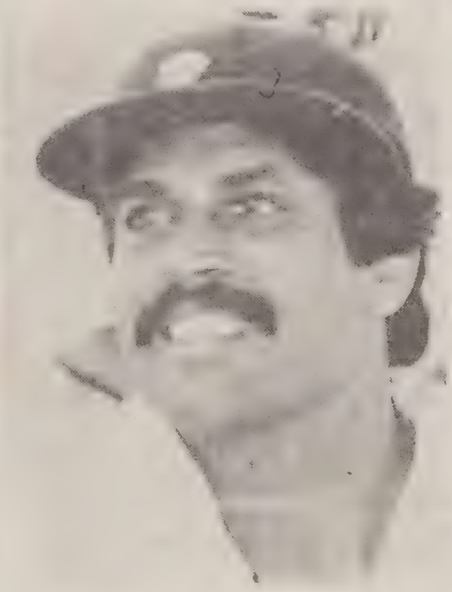
● शृखला में अधिकतम व्यक्तिगत रन भारत : पाकिस्तान में 447 सुनील गावस कर (78-79), भारत में 529 सुनील गावसकर (79-80), पाकिस्तान : भारत में 460 सईद अहमद (60-61), पाकिस्तान में 583 जहीर अब्बास (78-79)।

● अब तक का सर्वाधिक व्यक्तिगत योग—भारत : 9 टेस्ट में 976 रन (सुनील गावसकर), पाकिस्तान : 15 टेस्ट में 970 रन (हनीफ मुहम्मद)।

● पारी में श्रेष्ठ गेंदबाजी—भारत : पाकिस्तान में 6|49 जी रामचंद (कराची 54-55) भारत में 8|52 वीनू मांकड (दिल्ली 52-53) पाकिस्तान : भारत में 8|69 सिकंदर बख्त (दिल्ली 79-80) पाकिस्तान में 6|67 महमूद हुसेन (ढाका 54-55)।

● मैच में सर्वाधिक विकेट—भारत : पाकिस्तान में : 7|76 जी रामचन्द (कराची 54-55) भारत में 13|131 वीनू मांकड (दिल्ली 52-53,) पकिस्तान भारत में : 12|94 फजल महमूद (लखनऊ 52-53) पाकिस्तान में 9|128 सरफराज नवाज (कराची 78-79)

● श्रृंखला में सर्वाधिक विकेट—भारत पाकिस्तान में 21 (औसत 22·61) सुभाष गुप्ते 54-55, भारत में 32 (17·68) कपिलदेव 79-80, पाकिस्तान भारत में 24 (26.70) सिकंदर बख्त 79-80 पाकिस्तान में : 22 (15.86) खान महमूद 54-55।



कपिल देव

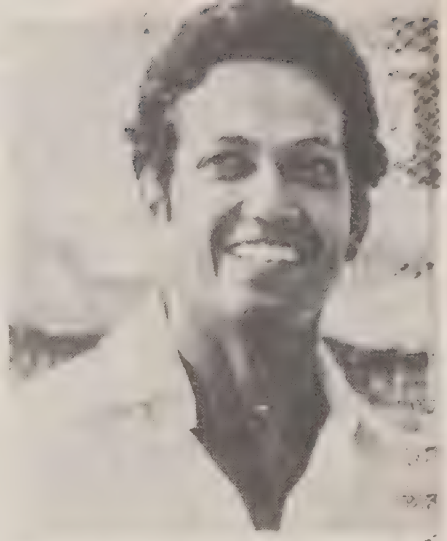
● कुल सर्वाधिक विकेट :

भारत के लिए : 9 टेस्ट में 39 (24·43) कपिलदेव, पाकिस्तान के लिए 14 टेस्ट में 44 (24·59) फजल महमूद।

● रेकार्ड साझेदारियां—

भारत के लिए :

पहला विकेट: 192 सुनील गावसकर और चेतन चौहान, लाहौर में, 1978-79 दूसरा विकेट : 117 सुनील गवासकर और मोहिन्दर अमरनाथ कराची में 1978-79, तीसरा विकेट 130 (नबाद) पंकज राय और विजय मांजरेकर, ढाका में, 1954-55, चौथा विकेट : 183 विजय हजारे और पॉली उमरीगर, बंबई में 1952—53, पांचवां विकेट : 177 पॉली उमरीगर और चंदू बोर्डे, मद्रास में 1960-61, छठा विकेट : 82, चंदू बोर्डे और बापू नाडकर्णी, बंबई में 1960-61, सातवां विकेट 95, कपिलदेव और करसन घावरी बंबई में 1979-80, आठवां विकेट 84, करसन घावरी और कपिल देव कराची में 1978-79 नौवां विकेट : 149 पी. जी. जोशी और आर. बी. देसाई, बंबई में 1960-61, दसवां विकेट : 109 हेमू अधिकारी और गुलाम अहमद, दिल्ली में, 1952-53।



महेन्द्र अमरनाथ

पाकिस्तान के लिए :

पहला विकेट : 162, हनीफ मुहम्मद और इम्तियाज अहमद, मद्रास में 1960-61; दूसरा विकेट : 246, हनीफ मुहम्मद और सईद अहमद, बंबई में 1960-61, तीसरा विकेट : 166, जहीर अब्बास और आसिफ इकबाल, फैसलाबाद में 1978-79, चौथा विकेट : 255, जहीर अब्बास और जावेद मियांदाद, फैसलाबाद में 1978-79, पांचवां विकेट : 155, अली मुद्दीन और अब्दुल हफीज कारदार, कराची में 1954-55, छठा विकेट : 154 मुश्ताक मुहम्मद और जावेद मियां दाद, कराची में 1978-79 सातवां विकेट 88, मुश्ताक मुहम्मद और इंतिखाब आलम कलकत्ता में 1960-61 आठवां विकेट : 82, वासीम राजा और इकबाल कासिम, कानपुर में 1979-80 नौवां विकेट 60, वसीम बारी और इकबाल कासिम बंगलौर में 1979-80, दसवां विकेट : 104, जुल्फिकार अहमद इलाही, मद्रास और अमीर में 1952-53।


सिलबिल पिलपिल
हॉकी फाइनल
आज का दिन हिन्दुस्तान के हितिहास में देसी घी के अक्छरों का लिख्या जायेगा। आज भारत होर पाकिस्तान के बीच नवम् एशियाई खेलों के हॉकी का फाइनल है, होर आज म्हारा भारत, पाकिस्तान को बुरो तरियां हरा कर हॉकी का खताब फिर जीत लेगा। हमने कई मन्दिरों में मन्नतें मांग रखी हैं। हॉकी स्टिकें लेकर वैष्णो देवी की जात्रा भी कर आये। याड़ो, फल तो जरूर मिलेगा।
रात को सुपना भी अच्छा आया। मने देखा कि म्हारी भेंस जो कई साल से सूरती थी फिर हरी हो गयी है।
फिर तो जीत भारत के हाथ में है।
नवम एशियाई खेल हॉकी
भारत—१
पाक—०
इन दोनों ने कितनी लग्न से इस मैच के लिए तैयारी कर रखी है। थम ही देख लो। जैसे ही भारत पहला गोल कर देगा सिलबिल जाट रेजोमेंट के ब्रास बेंड की वर्दी पहन कर बिगुल पर नया सबेरा धुन बजायेगा। उसके बाद पिलपिल टी.वी. के सामने बैठ कर शहनाई पर भीम पलासी राग तब तक बजाता रहेगा जब तक हमारी टीम विजय मंच पर खड़े होकर गोल्ड मैडल गले में न पहन ले।
हरे भाई जिन्दगी में ऐसा शुभ अवसर बार-बार थोड़े ही आता है एक बार आता है बस। ऐसी परीखछा की घड़ी में हम देश की आबरू के लिये अपना तन-मन-धन सब न्योछावर करने को तैयार हैं।
जिस देश में ऐसे-ऐसे देश भक्त हों उसको दुनिया की किसी ताकत से खतरा नहीं हो सकता।
ओ लाल बुझक्कड़ों थम दीवाना के पाठकों से बतियाते ही रहोगे पता है टैम का, क्या होरिया है? तीन बज गये हैं और भारत पाकिस्तान के बीच मैच शुरू भी हो चुका है।
और इस तरह भारत को पेनल्टी स्ट्रोक मिला है पाकिस्तान के विरुद्ध, देखें कप्तान जफर इकबाल गोल कर पाते है या नहीं। उन्होंने गेंद स्पाट पर रखा और यह अम्पायर का इशारा···और यह गोल······भारत एक गोल से आगे। यह गोल खेल के चौथे मिनट में ही हुआ।



ओ लमडो आज हम इतने खुस हैं कि अपनी सारी जायदाद भी लुटा सकते हैं। भारत के गोल करने की खुसी में हम सबको पेट भर कर मिठाई खिलायेंगे। यह क्रेडिट कार्ड काट कर अपने सहर के किसी भी हलवाई के पास चले जाना और भरपेट मिठाई खाना। क्रेडिट कार्ड पर अपने हस्ताक्षर कर देना, पैसे न देना। हलवाई मिठाई का बिल हमें भेज देगा। हम पेमेंट कर देगा। उसको समझाना कि बिल के साथ क्रेडिट कार्ड नत्थी करना न भूलना, बाद में क्रेडिट का चक्कर पड़ेगा न।
सिलबिल क्रेडिट कार्ड
जलेबी, गुलाब जामुन, बर्फी
इतने जल्दी खुसी में फूल कर कुप्पा मत होओ, अभी तो मैच शुरू ही हुआ है।
SSSSS
DSSSS
PSSSST
PSSSS
और यह कली मुल्ला ने पाकिस्तान के लिए गोल कर दिया।
देखा मैंने क्या कहा था। इतनी जल्दी पजामे से बाहर होने की जरुरत क्या थी? धीरज के साथ आगे-आगे देखो क्या होता है।
ऐह! इतना बड़ा जूता हमारे सिर पर पड़ने जारिया है।
ऐसा नहीं हो सकता। कमेंन्टेटरों को गलती हो रही होगी। सुबह की बेला में देखा म्हारा सुपना झूठ कैसे हो सकता है?
और यह पाकिस्तान ने एक और गोल कर बढ़त हासिल कर ली है...
भारत अभी बराबरी पर आ जायेगा घब-राओ मत।
और यह पाकिस्तान की तरफ से तीसरा गोल हुआ। इधर सिलबिल की आंखें फटी की फटी रह गयीं। आंखों के सामने अंधेरा होने लगा।
चूहे मुझसे यह सब देखा नहीं जाता, पाकिस्तान ने चौथा गोल भी कर दिया। मुझे बता दे हमने तुझे मारने के लिये जहर की पुड़िया जो ला रखी थी वह किस अलमारी मां रखी है। सारा जहर कैम्पा कोला के साथ खा जाना चाहता हूं।
नहीं



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये.

मूवी मसाला

मैं किसी का चमचा नहीं हूं
—शशी कपूर

जैसा कि देखने में आया है जबसे 'जंजीर' के साथ अमिताभ की शोहरत बढ़ी और वह सुपर स्टार बन गया उसने सभी के बहुत कामयाब स्टार बनने का चांस कम कर दिया। शशी वैसे भी कभी भी सूपर बिकने वाला नहीं था। केवल 'जब जब फूल खिले' के बाद सन् 1965-70 के दरमियान कुछ समय के ही लिए शशी की शोहरत बढ़ी थी।

अमिताभ में जनता समय के साथ मेल खाता एक ऐसा माडल देखती है जो सोने के दिल वाला अकेला व्यक्ति है जिसे अन्त में इन्साफ प्राप्त होता है—साथ ही वह अपने दिमाग और हाथों का प्रयोग दिल और जुबान से कहीं अधिक करता है। बाद की फिल्में 'नमक हराम' 'बेनाम' और 'मजबूर' में भी इसी तर्क पर अधिक जोर दिया गया है।

बीस वर्ष से भी ज्यादा से शशी फिल्म इन्डस्ट्री में मौजूद हैं, साथ ही वे फिल्मों से सम्बन्धित सबसे अधिक शक्तिशाली, जाने-माने और मशहूर लोगों में से एक हैं। शशी को अपना कैरियर आगे बढ़ाने के लिए अचानक अमिताभ या किसी कला निदेशक की आवश्यकता नहीं है। उसने फिल्म जगत में सब कुछ स्वयं देखा हैं 'सफलतायें और निराशायें' उसने सब कुछ स्वयं ही महसूस भी किया है। जनता के दिल की धड़कन बनना तथा असफलता के आंसू भी पिए हैं। उसे स्वयं मालूम है वह कितने पानी में है और हवा का क्या रुख है। क्योंकि अपने अहम् पर मरने वालों से विपरीत शशी स्क्रीन से अलग भी एक महान अभिनेता हैं। वर्षों से एक बहुत ही कठिन रोल अदा कर रहे हैं। मैटनी आईडल के लिये सबसे कठिन रोल जो एक अधेड़ व्यक्ति का होता है।



'नाम में क्या रखा है ?

यदि बार-बार दोहराये जाने वाली बात 'नाम में क्या रखा है' में कुछ शक था तो डिम्पल के केस ने इस पर पूरा विश्वास दिला दिया कि नाम ही सब कुछ है जब तक की उसमें आकर्षण हो।

डिम्पल इतनी खोई-खोई, पीली और बूढ़ी लगने लगी है कि 'ताज' के गोल्डन ड्रैगन रेस्तरां में मेज पाने के लिए उसे मैनेजर को स्वयं का परिचय डिम्पल खन्ना के नाम से देना पड़ा, डिम्पल कपाडिया से नहीं। तो अभी भी उसका यश पर अधिकार डिम्पल खन्ना होकर ही है।

और वह पाकिस्तान की अमर गायिका 'रेशमा' जो यहां आई थी और उन्होंने एक बार 'बाबी' देखी थी तो वह डिम्पल से मिलने की अत्यन्त उत्सुक थी और जब यश चोपड़ा के जन्म-दिन की पार्टी में उनका डिम्पल से आमना-सामना हुआ तो उन्होंने निराश होकर कहा था—'मैं तो बाबी से मिलना चाहती थी इस डिम्पल से थोड़े ही। और यह है हालत ! डिम्पल दोबारा फिल्मों में काम करना चाहती है।

शुक्र गुजार चौकीदार

मिथुन हैदराबाद में अपनी फिल्म 'बोक्सर' की शूटिंग कर रहे थे। उनके पास 16 दिन की लम्बी शूटिंग के दौरान पैसे की कमी पड़ रही थी। पर निर्देशक राज सिप्पी ने एक बोम्ब गिराया। उनकी मांग थी कि बोक्सिंग सीन की शूटिंग के लिए बहुत सारे दर्शकों को लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में बुलाया जाय। मिथुन के दिमाग में एक विचार आया और उन्होंने स्थाननीय समाचार पत्रों में दर्शकों से शूटिंग देखने आने का इश्तहार छापा। कहना न होगा उनके इश्तहार का पूरा असर हुआ और बहुत से लोग स्टेडियम पर शूटिंग देखने के लिए पहुंच गए। बाहर खड़े चौकीदार ने आने वाले लोगों की साईकिलों का ध्यान रखने के लिए एक रुपए फी साई-किल दर लगा दी। पहले दिन ही चौकीदार ने लगभग 15,000 रुपए एकत्रित किए। शूटिंग तीन दिन और चली थी।





रति अपनी लोकप्रियता का पूरा फायदा उठाती हुई।

रति अग्निहोत्री आजकल अपनी लोकप्रियता का पूरा फायदा उठा रही है। जाने कैसे उसके मन में यह बात बैठ गई है कि वह हेमा मालिनी का स्थान ले लेगी। वास्तव में एक खास जर्नलिस्ट ने तो उसे इस बात का पूरा विश्वास दिला दिया है।

परन्तु अचरज इस बात का है कि रति अभी भी अपनी मिडल क्लास प्रवर्ती सब कुछ समेट लेने से अपने को छुटा क्यों नहीं पा रही है। सैट पर पहुंचते ही सबसे पहले वह पेट्रौल के पैसों की मांग करती है फिर अनार के रस के दो गिलासों की फरमाईश पेश होती है जिसे लाने के लिए कभी-कभी दूर जाना पड़ता है। जिससे शूटिंग को देर होती जाती है। यह सब हो जाने पर एक टोकरी ताजे फल मांगे जाते हैं जो शूटिंग समाप्त होने पर रति अपने घर ले जाती है।

पर कुछ दिन पहले 'मेरा फैसला' की शूटिंग के समय प्रोड्यूसर साहब रति को अपने स्वयं के कपड़े पहन कर कैमरे का सामना करते देख अत्यन्त प्रसन्न हुए यह सोचकर कि चलो कपड़े बनवाने के पैसे बचे। परन्तु अभी तो उन्हें भारी धक्का लगने वाला था क्योंकि दिन की शूटिंग के बाद रति ने उन्हें 3,500 रुपये ढीले करने को कहा, जो पैसे उन्होंने ड्रैस पर खर्च किये थे। ड्रैस पर रति ने कुछ सौ रुपए से ज्यादा हरगिज खर्च नहीं किये होंगे।

शत्रुघ्न का स्वभाव बदला

जबसे शत्रुघ्न ने प्रोड्यूसर बनने का फैसला किया है वो भी आफ बीट और कला फिल्मों का उन्होंने यह भी खुल्लम खुल्ला कहना आरम्भ कर दिया है कि उनकी प्रेरणा शशी कपूर हैं। उनका स्वभाव भी नरम पड़ गया है और वह स्वयं काफी शान्त प्रतीत होते हैं।

'कालका' के सेट्स पर वह एक कोने में बैठे चुपचाप ऊपर देखते रहते थे मानो कुछ गम्भीर सोच-विचार कर रहे हों, शायद उनका विचार है कि सभी बुद्धिमान व्यक्तियों को श्याम बेनिगल या गोविन्द निहलानी जैसे दिखना चाहिए। किसी को उन्हें बताना चाहिए कि अक्ल दिखावे से नहीं, वरन् ठोस काम करने से आती है।

ठोस काम हो या न हो पर प्रोड्यूसर बनने के सिर दर्द ने शत्रुघ्न की बड़बड़ाहट तो बन्द कर ही दी है।



अमिताभ के पलंग के लिए होड़

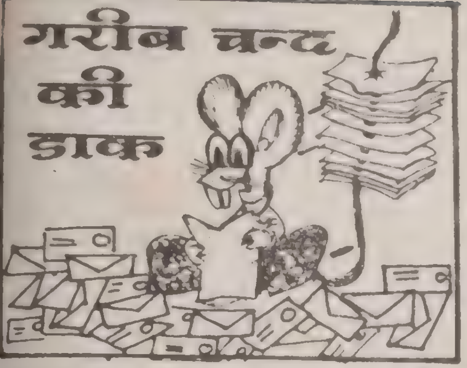
ब्रीच कैंडी हस्पताल के इनटेन्सिव केयर यूनिट के उस पलंग की बड़ी मांग हो रही है जिस पर अमिताभ दो महीने तक लेटे थे, ऐसा क्यों? पहली बात तो यह है कि एक फिन्नोमेना उस पर लेटा था। दूसरे वह मौत के मुंह से बचकर बाहर आ गया था जबकि कुछ अभिनेताओं के पुजारी रोगी अपने आम चैकअप के लिए या छोटी-मोटी बीमारी के कारण हस्पताल आते हैं वे नर्सिंग स्टाफ को अमिताभ द्वारा प्रयुक्त पलंग पाने के लिए बड़े-बड़े टिप देने को तैयार रहते हैं इसके साथ ही ऐसा भी सुना जाता है कि चिन्ताजनक हालत के रोगी उस पलंग को इस्तेमाल कर पाने को लिए कुछ भी देने के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि उस पलंग का इस्तेमाल करने से वे अवश्य स्वस्थ हो जायेंगे। हम हिन्दुस्तानियों के ऐसे अंधविश्वास हैं और सूपर स्टार का ऐसा महान जादू है।

फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर





लुआगा ! तुम्हें याद है कि तुमने मुझसे हकूमत कैसे छीनी थी ?
छीनी थी ? तुम्हारा मतलब इस बात से है कि तुमने ठीक चुनाव करा कर बाद में विद्रोह करा दिया था ।
नकाब पोश फैसला कराने के लिए तुम्हें न्याय परिषद के पास ले गया था ।
चीफ चुनाव की बात समझते थे इसलिए उन्होंने फैसला किया
कुश्ती में जो जीत जाय वह हाकिम बनेगा ।
FALK & BARRY 12/3
याद है बबाबू ! वह कुश्ती मैंने जीती थी
लुआगा जीत गया । जंगल के कानून के अनुसार बबाबू को कत्ल कर दो ।
चीफ महोदय ! मैं नये कानून का आदर करता हूं । पर किसी बेबस को खत्म करना नहीं चाहता ।
मैं···मैं यह नहीं पढ़ सकता ।
अच्छा तो जो मैं बोलता हूं वही बोलते जाओ । मैं जनरल बबाबू अपनी सेना को हथियार डाल
का आदेश देता हूं ।
अब तुम यह संदेश राष्ट्र के नाम प्रसारित कर दो । तुम त्यागपत्र दे रहे हो और विमान को खत्म कर रहे हो ।
और कुछ बबाबू ?
हां ! अपनी सेना से कहो कि मेरे आदेशों का पालन करे ।
तुम समझते हो कि मैं यह सब कुछ कर दूंगा तुम बिल्कुल मूर्ख हो ।
हम देखते हैं मूर्ख कौन है । आदमी को बोलने पर मजबू
करना जानता हूं ।
जैकाल । यह माना तो बहुत भारी है । इसे तुम पकड़ लो मुझे मोती दे दो ।
ठीक है ! चलो ऐसा ही कर लेते है ।
कुछ घंटे बाद···
मैं यह जूते पहन कर एक कदम नहीं चल सकता । मैं इन्हें उतार रहा हूं
!
भूं......
ठीक है । यहां से हमें कोई सवारी मिल जाएगी ।



प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया मण्डला : इन्सान जब सजा से डरता है तो गुनाह क्यों करता है ?

उ० : जजों, वकीलों और पुलिस व जेल विभाग वालों की रोटी रोजी बनाये रखने के लिए ।

कमल किशोर राही, प्रकाश कुमार राही, बड़ीबा (राज०) : गरीब चन्द जी, क्या आप घर में इसी तरह की ऊटपटांग बातें करते रहते हैं ?

उ० : रिहर्सल तो अपने घर से ही कर के आता हूं ।

मनोज जी. जैसवानी, उल्हासनगर : 'गम भुलाने के लिए नशीली चीजों के सिवाय और कौन सी चीजें हैं ?

उ० : एक ही चीज है, आदमी फिल्मी हीरो की नकल करे । अपने सिर पर पत्थर मारे और याददाश्त खो बैठे ।

परमानन्द, उल्हासनगर : कहते हैं कि इन्सान पैसों के लालच में इन्सान को भूल जाता है । जब कि कुत्ता अपने मालिक को नहीं भूलता, ऐसा क्यों ?

उ० : कुत्ते के सामने महंगाई, बेकारी और टैक्सों को देने की समस्या नहीं है ।

शिवचन्द्र खुराना, लुधियाना : अंकल जी इश्क में आदमी आबाद होता है या बर्बाद ?

उ० : आदमी बर्बाद होता है और बीवी बच्चे आबाद होते हैं ।

सतीश अनेजा, सिरसा : आप सिरसा कब आ रहे हैं ?

उ० : जब सिरसा पैर सा बन जायेगा ।

अशोक सांवरिया 'जौहर', देहरादून : गरीब चन्द जी यदि रिश्वत देने पर भी नौकरी न मिले और रिश्वत के पांच हजार भी डूब जायें तो किसके पास फरियाद पहुंचायें ?

उ० : अपने होने वाले ससुर के पास दहेज में पांच हजार की बढ़ोत्तरी की मांग के साथ ।

मनोहर नेमनानी, अकोला : गरीबचन्द जी, आज हर तरफ भ्रष्टाचार, बलात्कार लूटमार, असामाजिकता का वातावरण किस तरह कम हो सकता है ?

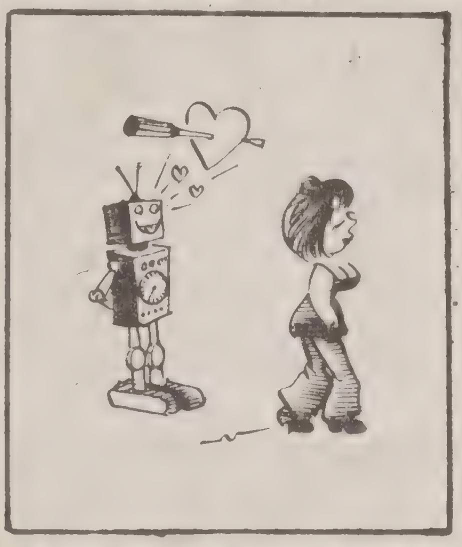
उ० : कोई ऐसी बीमारी फैलाकर जो आनन-फानन में दो-तिहाई जनसंख्या का सफाया कर दे ।

वासदेव 'भारतीय', कटनी : विवाहित और अविवाहित में क्या अन्तर है ?

उ० : लिखाई में केवल 'अ' का अंतर है ।

ए जब्बार दिलकश, बीकानेर : गरीबचंद जी लोग गम भुलाने के लिए शराब क्यों पीते हैं ?

उ० : गम भुलाने के लिए कोई दूसरी कारगर दवा उपलब्ध नही है ।



प्र ब बाबू शर्मा, [illegible], दिल्ली : माई डियर गरीबचन्द जी, मैंने एक किताबों की दुकान खोली है जिसमें आपके साली-सालों तथा भाई-बहनों ने ऊधम मचा रखा है । कृपया उन्हें अपने पास बुला लीजिए ।

उ० : उन बेचारों को क्यों उखाड़ना चाहते हैं आप ? अपनी दुकान का नाम 'विधानसभा पुस्तक भण्डार' रखें ।

अशोक मारकंडे, राजेन्द्र नगर : यदि प्यार में वासना बाधा डाले तो ?

उ० : आपसे किसने कहा कि वासना प्यार में बाधा डालती है ?

विक्की जुगनू, कानपुर : मेरी प्रेमिका शादी से पहले आपका आशीर्वाद मांग रही है बताइये उसको मैं क्या जवाब दूं ?

उ० : वह आपसे शादी कर रही है या किसी और से ? मुझे तो आसार अच्छे नजर नहीं आते । हमने पहले भी बहुत से आशीर्वाद मांगने वाले देख रखे हैं ।

अमन नंथानी, कोटद्वार : गरीब चन्द जी आपकी गरीबी का राज क्या है ?

उ० : इन्कम टैक्स वाले ?

कृष्ण बरनवाल, भागा बाजार : इन्सान के जीवन में मनोरंजन का बड़ा स्थान है, सिनेमा उसकी पूर्ति कहां तक करता है ?

उ० : दो तीन घंटे तक ।

अशोक खुराना 'स्वीटी' कलानौर : जिस की भी भलाई करता हूं वहां से बुराई ही मिलती है, क्या करूं ?

उ० : यह सोचकर संतोष कर लें कि कुछ तो मिला, खाली हाथ तो नहीं लौटना पड़ा :

रवि भाटिया, नई दिल्ली : लड़का लड़की से कब डरता है ?

उ० : जब शादी का जिक्र करने लगती है ।

केवल प्रकाश दूआ, काशीपुर : भारत में जापान, इंगलेंड आदि विदेशी वस्तुयें प्रसिद्ध हैं क्या विदेशों में भी भारत की कोई वस्तु मशहूर है ?

उ० : विदेश यात्रा के शौकीन भारत के मोटे-मोटे मंत्री प्रसिद्ध हैं ।

राजेन्द्र बठला, कलानौर : गरीबचन्द जी, जब आंख दुखती हैं तो लाल हो जाती हैं, दिल दुखता है तो कैसा हो जाता है ?

उ० : हरा हो जाता है । आपने सुना होगा 'जख्म हरा हो गया'।

सुखविन्द्र जोड़ा, कृष्णा पार्क : मजबूर इन्सान की मजबूरी का लोग फायदा क्यों उठाते हैं ?

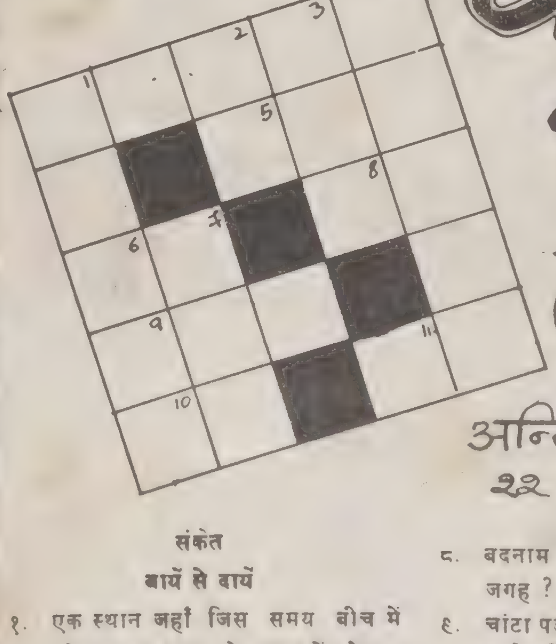
उ० : तवा गर्म देखकर हर किसी का दिल अपने-अपने परांठे सेंकने का करता ही है ।





दीवाना वर्ग पहेली

10 रु. इनाम जीतिये



अन्तिम तिथि
२२-१-८३

संकेत

बायें से दायें

१. एक स्थान जहाँ जिस समय बीच में जोर डाला जाता तो अन्त में बेअन्त पूर्व से हवां चलने लगती है? (५)

५. एक हंसोड़ जाति जो कुछ-कुछ कृष्ण दीवानी से मिलती है.? (३)

६. चेप्पी लाल का अगुवा अनुयायी। (२)

८. बदनाम इलाकों में पानी के बहने की जगह? (२)

९. चांटा पडने के कारण दर्द से झटके खाने की क्रिया? (३)

१०. खोखली वस्तु जो उल्टी होने पर रम जाती है। (२)

११. उल्टे इन्कार सा बैठो कुछ भी नहीं। (२)

ऊपर से नीचे

१. चर अचर का अनोखा दृश्य है यह, एक राजपूती क्रिकेटर के सिर पर वह रखा है जो असल में नीचे होना चाहिये था। (२-३)

२. त्रिपुरा व नागालैंड में मिले अवशेषों का गुण! (३)

४. नर सीप ला और बनाकर देख कितना स्वाद है उसमें! (५)

७. प्यारी जिसके पास शुरू व अन्त में छा जाने वाली चीज है और बीच में डर की शुरुआत। (३)

नाम ------------
पता ------------

ष्ठ १७ से आगे

कमात्र चांस ढूंढ़ लिया है। और निशा ी कुटी देख मोहित हो गयी थी। यह क था कि स्थान थोड़ा अकेला था पास पास गाँव दो मील पर था, कुटी अपने प में अपने पुराने संसार के रूप के साथ ं गुसलखानों का आराम, गर्म पानी के स्टम बिजली और टेलीफोन की सुविधा लिए इतनी अधिक सुन्दर थी कि तुरन्त उसके आकर्षण का शिकार हो जाना वाभाविक था और फिर एक दुविधा ठी, मालिक जो कि एक अमीर आदमी कुटी को किराये पर नहीं देना चाहता , वह सिर्फ बेचना चाहता था।

राकेश मोहन हालांकि काफी धनी पर अपने मूल धन को छू नहीं सकता वह अधिक से अधिक एक लाख रुपया ा सकता था, मालिक की तीन की मांग पर निशा जिसका दिल कुटी पर ोहित हो चुका था उसकी मदद को आगे ई। उसका मूल धन बेयरर बाँड में ने के कारण आसानी से लिया जा कता था। कुटी खरीदने के लिए वह पना आधा धन देने को सहमत हो गई। र बुलबुल कुटी उनकी अपनी हो गई, सका निशा को एक क्षण के लिये भी भी पश्चाताप नहीं हुआ। यह टीक था नौकरों ...

से बना लेती थी।

फूलों भरे बाग की देखभाल करने गाँव से ही एक बूढ़ा व्यक्ति आ जाया करता था।वह सप्ताह में दो दिन इसके बाग में काम करने आता था। जैसे ही निशा घर के किनारे से मुड़ बाग में पहुंची, वह बूढ़े माली को बाग में काम करते देख कर दंग रह गयी क्योंकि उसके कार्य दिवस तो सोमवार और शुक्रवार हैं।

क्यों जार्ज तुम आज यहाँ क्या कर रहे हो? उसने उसकी ओर बढ़ते हुए पूछा।

बूढ़ा माली कुछ मुस्कराता सा सीधा हुआ और अपनी पुरानी टोपी को छू कर निशा को अभिवादन किया।

'मैं जानता था आपको अचम्भा होगा मैडम, पर बात ऐसे है बड़े अफसर के घर इस शुक्रवार को एक मेला लगेगा, तो हमने अपने मन में सोचा कि ही न साहब न ही उनकी मेमसाहब को कुछ पता चलेगा अगर हम शुक्रवार के बजायं बुद्धवार को काम कर जायें', बूढ़े माली ने उत्तर दिया।

'वह तो ठीक है', निशा बोली.आशा है तुम मेले में खूब आनन्द उठाओगे।'

'उम्मीद तो है' जार्ज ने साधारण ...र जवाब दिया। 'मेले में पेट भर भोजन खाना बहुत ही बढ़िया बात ...र तुम जानते हो कि तुम्हें इसके ...हीं देने होंगे। बड़े मालिक का पूरा ...म होता है, वे अपने सब किराये के लिए तरीके से बैठ कर भोजन का इन्तजाम करते हैं। फिर मैंने सोचा मैं आपको आपके बाहर जाने से पहले एक बार मिल भी लूं ताकि बार्डर के विषय में आपकी इच्छा जान लूं, ताकि मेरे ख्याल से आपका कोई पता नहीं आप कब तक वापिस लौटोगी?

'परन्तु मैं तो कहीं जा ही नहीं रही।'

जार्ज देखता रह गया।

'क्या आप कल बम्बई नहीं जा रहीं?

'नहीं, तुमने ऐसा कैसे सोचा?

जार्ज ने अपने सिर को झटका दिया।

'गांव में कल सहाब मिले थे, उन्होंने बताया था कि आप दोनों कल बम्बई जा रहे हैं, और दुबारा वापिस कब आयेंगे पक्का नहीं है।'

'बकवास', निशा ने हंसते हुए कहा 'तुमने कुछ गलत समझा होगा।'

साथ-साथ निशा सोचने लगी आखिर राकेश ने बूढ़े जार्ज से ऐसा क्या कहा होगा कि उसे ऐसी गलत फहमी हुई बम्बई जाना? वह दुबारा कभी बम्बई नहीं जाना चाहती थी।

'मुझे बम्बई से नफरत है' उसने अचानक जोर से कहा। 'आह! जार्ज शान्तीपूर्वक बोला, 'मुझे कुछ गलती लगी होगी फिर भी उन्होंने साफ-साफ कहा था ऐसा ही लगा मुझे।बड़ी अच्छी बात है कि आप यहाँ रुकेंगी। मुझे भी यह फ़िज़ूल की भागदौड़ अच्छी नहीं लगती

रो बकवास



और बम्बई को तो मैं कुछ भी नहीं समझता ! मुझे कभी वहाँ जाने की जरूरत नही पड़ी है। बहुत ही ज्यादा मोटर कार हो गई हैं—यही परेशानी है। आजकल वे सौभाग्यशाली हैं अगर कहीं टिक कर रह पायें तो । मि० अमर जो पहले इस घर में रहते थे बड़े ही शान्त और धैर्यवान स्वभाव के व्यक्ति थे जब तक उन्होंने मोटर कार नहीं खरीदी । और मोटर कार खरीदे उन्हें एक माह भी न हुआ कि काटेज को बेचने का फैसला कर लिया । काफी पैसा लगाया था उन्होंने इस पर, सब बैडरूम्स में नल और बिजली तथा अन्य चीजें । मैंने उनसे कह दिया था उन्हें अपने पैसे कभी वापिस नहीं मिलेंगे पर उन्होंने उत्तर दिया था,' मैं दो लाख रुपये का एक-एक पैसा वसूल लूंगा इस घर से और बेशक उन्होंने कर भी लिया ।'

'उन्हें तीन लाख मिले थे', निशा ने मुस्कराते हुए कहा ।

'दो लाख', जार्ज ने दोहराया 'जो काटेज की कीमत माँग रहे थे । वे यहाँ सभी जानते थे ।'

'पर वास्तव में वह तीन लाख थी' निशा बोली ।

'औरतों को संख्या कभी समझ नहीं आती, असहमत हो जार्ज बोला 'आप मुझसे यह तो नहीं कह रहीं कि मि. अमर ने खुल्लमखुल्ला आप से तीन लाख मांग लिये थे ।'

'उन्होंने मुझ से नहीं मागे थे, उन्होंने मेरे पति से मांगे थे', निशा बोली ।

जार्ज एक बार फिर फूलों की क्यारी में काम करता-करता रुका । और जिद के से लहजे में बोला ।

'दाम दो लाख ही थे'

निशा ने उससे बहस नहीं की और दूसरी ओर की एक क्यारी में जाकर फूल तोड़ने लगी । फूलों का गुच्छा अपने हाथ में लिये घर की ओर बढ़ते हुए निशा ने कुछ हरा-हरा पत्तों के बीच से झाँकता देखा । उसने झुककर उसे उठा लिया वह उसके पति की पाकेट डायरी थी ।

उसने उसे खोला और उसमें की गई ऐन्टरीज को दिलचस्पी से देखने लगी । शादी के तुरन्त बाद से ही निशा ने देखा था कि आवेग शील और भावुक राकेश में सफाई और तरीके का गुण मौजूद था । वह भोजन ठीक समय पर करने के विषय में बहुत सनकी था साथ ही वह अपने पूरे दिन का कार्यक्रम बड़े ध्यान से एक टाइम टेबल के समान पहले ही बना लेता

डायरी में 14 मई की एन्टरी

उसे बहुत मजा आया 'निशा से विवाह 8·30 बजे ।

'बुद्धहीन' निशा स्वयं से बड़बड़ा सफे पलटते हुए अचानक वह एक ज रुकी ।

'बुधवार, जून 18'—यह तो अ ही है ।'

उस दिन के खाते में राकेश की लिखाई में केवल 9 बजे रात लिखा थ 9 बजे रात को राकेश क्या करना चा है, निशा सोचने लगी फिर अपने म हंसते हुए उसने सोचा यदि यह भी कहानी में हो रहा होता तो अवश्य इस डायरी में कुछ गुप्त बातों का खुलता। किसी दूसरी स्त्री का नाम लिखा मिलता । उसने फिर से पि पन्ने उलटने शुरू किये, उनमें तारीखें व्यापार सम्बन्धी सौदों के विषय में लि था, अपोइटमेंन्ट के समय लिखे थे, केवल एक ही स्त्री का नाम था—उस अपना !

फिर भी डायरी को जेब में डाल फूल लेकर घर के भीतर जाते हुए अजीब सी भावना उसके भीतर उठ थी, देवेनराय के वे शब्द उसके दि में उभर रहे थे मानों वह उसके क खड़ा कह रहा हो "वह आदमी तुम

पहेली इनाम

ऊपर से नीचे

१. चर अचर का अनोखा दृश्य है यह, एक राजपूती क्रिकेटर के सिर पर वह रखा है जो असल में नीचे होना चाहिये था । (२-३)

२. त्रिपुरा व नागालैंड में मिले अवशेषों का गुण ! (३)

४. नर सीप ला और बनाकर देख कितना स्वाद है उसमें ! (५)

७. प्यारी जिसके पास शुरू व अन्त में छा जाने वाली चीज है और बीच में डर की शुरुआत । (३)

की (२)

झटके (३)

र रम (२)

नहीं । (२)

नाम ---------------

पता ---------------



गिरीश कुमार, 392/बी, [illegible] पुरी, मेरठ, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना।

हरजीत एस., बीत नारंग क्लाथ स्टोर्स, मालवा मिल, इंदौर, 17 वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना।

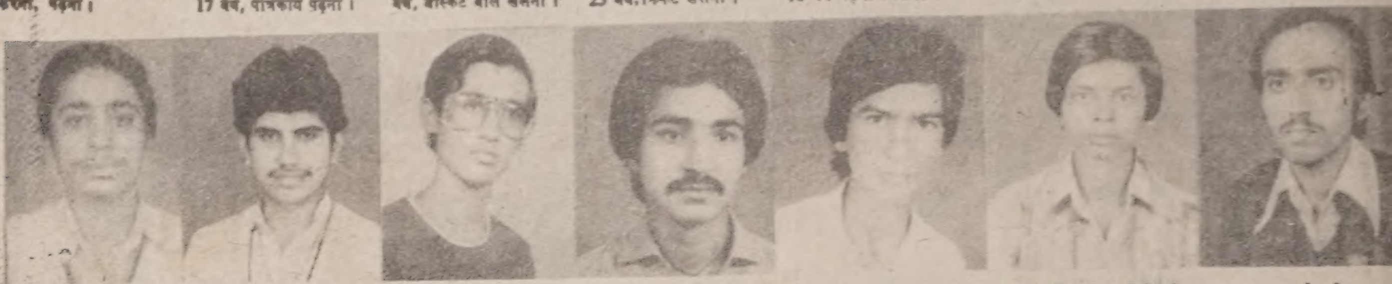
नवीन कुमार गुप्ता, ब. 235/5-बी, बेगमबाग मेरठ, 21 वर्ष, बास्केट बाल खेलना।

मं. कुलवन्त राय जैन, फैंडस क्रिकेट क्लब, कल्लनवाली (हरि०), 25 वर्ष, क्रिकेट खेलना।

मदन मोहन प्रसाद, गांव व पो. गम्तरिया, रुली जि. सारण 16 वर्ष पढ़ना लिखना।

सुरिन्द्र खुराना म. 126-डी, नई मण्डी सिरसा, 17 वर्ष, 'जूडो कराटे करना।

दिनेश कुमार जैन, बारी रोड, भीनमाल, 15 वर्ष, दीवाना पढ़ना तथा खेलना।



हरीश कुमार खेचलानी जानकी मसाला उद्योग, रीवा, 18 वर्ष, गीत लिखना, सहायता करना।

पुरोहित प्रताप सिंह, बी. पी. खाना देवर (भीनमाल), 17 वर्ष, भजन गाना।

एम. कमरुद्दीन आर. एम, पी-6/76 मंगोलपुरी, दिल्ली, 21 वर्ष, संगीत सुनना।

प्रकाश तुलस्यानी महावीर जनरल स्टोर, दाउबी रोड, 19 वर्ष, दोस्ती करना।

भवर पेडीवाल द्वारा शंकर लाल जी पेडीवाल, नई आबादी रावलसर, 21 वर्ष पढ़ना।

रजनीश त्रिपाठी 'दोसी' बी-2/63 सी, भरैनी वाराणसी, 18 वर्ष, लेख व कवितायें।

राजकुमार शर्मा, ई-1 राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ, 22 वर्ष, दोस्ती करना।



रमानाथ त्रिपाठी, नझाई बजार ललितपुर, 23 वर्ष, मोटर साई कल चलाना।

गुरमीत सिंह पुत्र सुरजीत सिंह म० नं० 442, वार्ड नं० 21, भटिण्डा, 16 वर्ष, पढ़ना।

अजय कुमार गर्ग, द्वारा अजय पुस्तक भन्डार, बुलन्दशहर, 21 वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना।

अरविन्द, डी-1/18 लोदी रोड दिल्ली, 17 वर्ष, गाने गाना व नाटक लिखना।

प्रकाश कटारिया, रामगढ़ रतलाम (म० प्र०), 21 वर्ष, दोस्ती करना।

बिमल कुमार बोगड़, ई/51, सेक्टर 6, राऊरकेला उड़ीसा, 20 वर्ष, पढ़ना और पढ़ाना।

मिन्टू, स्टूडियो छाया पूर्णिया, 18 वर्ष, फोटोग्राफी करना, दीवाना पढ़ना।



धनराज संवतानी अप्पू साईकल सर्विस प्रताप नगर, जोधपुर, 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

योगेश कुमार गर्ग, 4/189 श्री नन्नोमल गर्ग, महावीर कुंज, आगरा, 15 वर्ष, खेलना।

हरीश चोपड़ा, 5-एल माडल टाऊन, सोनीपत, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

सुनील कुमार सचदेव, सचदेव निवास फाफाडीह, रायपुर, 16 वर्ष, फुटबाल खेलना व पढ़ना

सुशील समदानी द्वारा महेश पुंगलिया 483 चैकों का बास जोधपुर, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता।

राजेश तण्डुकार 'जंग' 8/494 वटू मूवहाल काठमांडो नेपाल, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

मो० नईम, मो० रफी मार्ग, खगोल, पटना, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



मो० सुऐब कुरेशी, छोटी खगोल पटना, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना व नाट्य करना।

ललिन कुमार शर्मा द्वारा भारत स्टोर्स, बस स्टेण्ड नाथद्वारा, राजस्थान 18 वर्ष, पत्र-मित्रता।

रमेश कुमार विश्वकर्मा जेकब सर्कल बम्बई, 19 वर्ष, दीवाना पढ़ना तथा घूमना।

अशोक कुमार सोनी, नई लाईन गंगाशहर, बीकानेर, (राज.) 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

बासदेव भारतीय टी-12 फैरिन लाइन माधव नगर, कटनी, 19 वर्ष, क्रिकेट डांस व मित्रता।

डा० महिन्द्र चौधरी, गां. व पो. वकीला वाला फिरोजपुर, पं० 24 वर्ष, फोटोग्राफी करना।

उमेश कुमार कपूर, मीनाक्षी जनरल स्टोर, मेरठ कैन्ट, [illegible] वर्ष, फोटोग्राफी करना।



सुखवन्त सिंह बेदी, अमृता फोटो स्टूडियो अमरिया, पीलीभीत, 23 वर्ष, कसरत करना।

मुकेश कुमार जैन पारस, 19 अबुल फजल रोड, बंगाली मार्केट, दिल्ली, 22 वर्ष, अभिनय।

ए० ए० खुराना, ए-56 कलानौर रोहतक, 23 वर्ष, मित्रता करना, टिकट संग्रह करना।

दविन्दर सिंह, रेखराज चौक बाजार, जुगसलाई, टाटानगर, 19 वर्ष, पत्र मित्रता करना।

राजू नागपाल, सुराजा बाजार, जिला होशियारपुर, 14 वर्ष, क्रिकेट खेलना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ------------------------------

पता ------------------------------

आयु ---------- शौक ----------

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता